पीएनबी दुर्गवाहिनी

डिजिटल बैंकिंग एवं तकनीति नवाचार विशेषांक

अंक 6

पंजाब नैशनल बैंक, अंचल कार्यालय, दुर्गापुर की छमाही हिंदी गृह पत्रिका

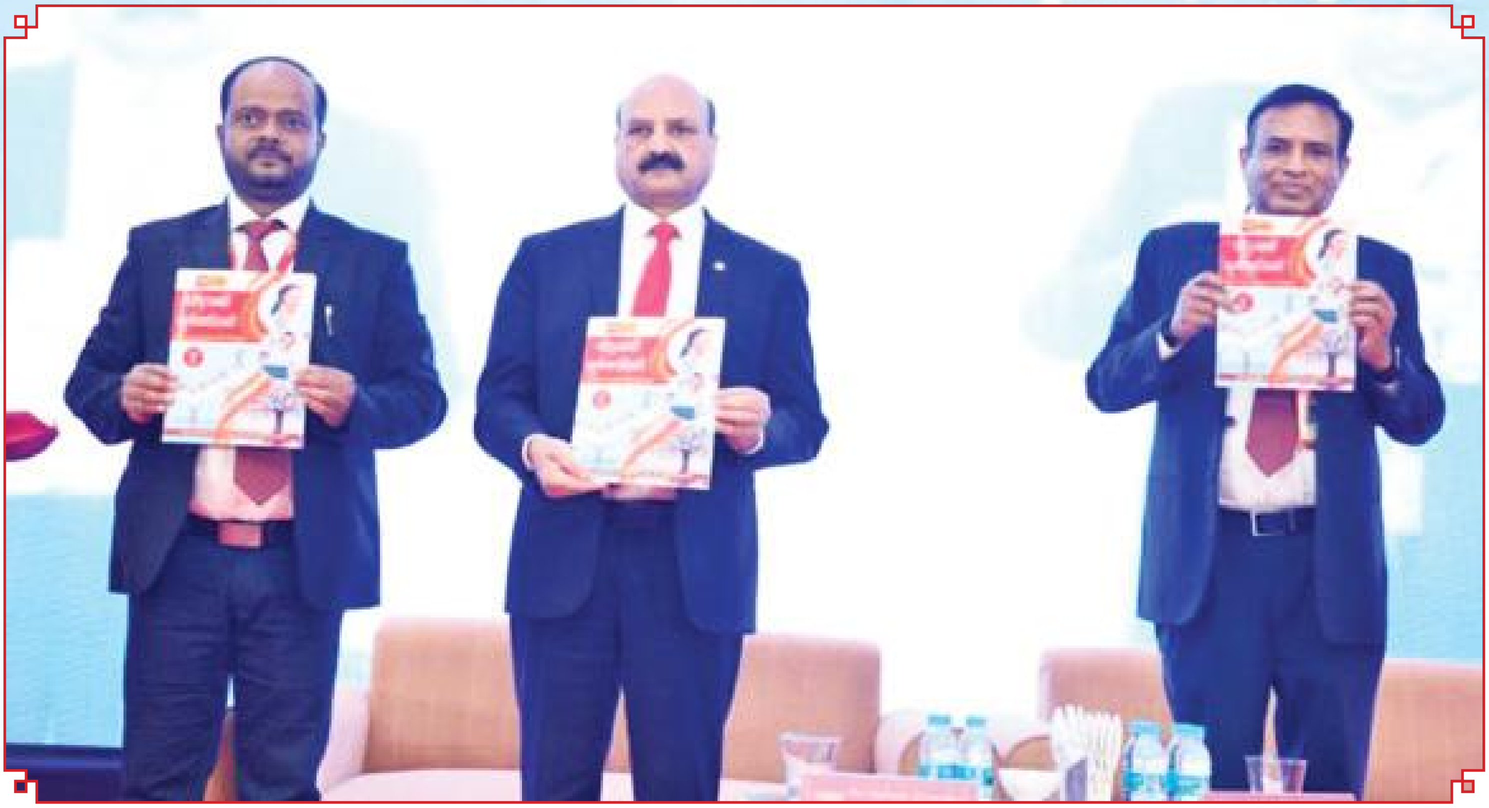

प्रबंध निदेशक मुख्य कार्यपालक अधिकारी एवं अंचल प्रमुख द्वारा दुर्गवाहिनी अंक - 5 का विमोचन

अगरतल्ला में आयोजित पूर्व एवं पूर्वोतर क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन में अंचल कार्यालय दुर्गापुर को द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित करते हुए गृह राज्यमंत्री श्री बंदी संजय कुमार से शील्ड एवं प्रमाण पत्र प्राप्त करते हुए अंचल प्रमुख दुर्गापुर श्री संजीव कुमार एवं वरिष्ठ प्रबंधक राजभाषा श्री आनंद बिहारी साव ।

प्रबंधकीय मंडल

मुख्य संरक्षक

श्री संजीव कुमार
महाप्रबंधक/अंचल प्रबंधक

संरक्षक

श्री राजेश कुमार प्रमाणिक
उप अंचल प्रमुख
अंचल कार्यालय, दुर्गापुर

सुरेश चन्द्र षड़ंगी
उप महाप्रबंधक
आंचलिक लेखा परीक्षा कार्यालय

रविन्द्र कुमार
उप महाप्रबंधक
अंचल कार्यालय, दुर्गापुर

श्री राजेश श्रीवास्तव
उप महाप्रबंधक
अंचल कार्यालय, दुर्गापुर

परामर्शदाता

श्री सत्येन्द्र मिश्र
मंडल प्रमुख
मंडल कार्यालय, दुर्गापुर

श्री बुद्धदेव साहा
मंडल प्रमुख
मंडल कार्यालय, बर्द्धमान

श्रीमती सरिता सिंह
मंडल प्रमुख
मंडल कार्यालय, न्यू जलपाईगुड़ी

श्री तापस कांति झा
मंडल प्रमुख
मंडल कार्यालय, मालदा

श्री ब्रजमोहन पांडा
मंडल प्रमुख
मंडल कार्यालय, नदिया

मो. ज़िशान अहमद
मंडल प्रमुख
मंडल कार्यालय, मुर्शिदाबाद

सुश्री समापिका चौधरी
मंडल प्रमुख
मंडल कार्यालय पुरुलिया

मुख्य संपादक

श्रीमती सुकन्या दास दस्तीदार
सहायक महाप्रबंधक
अंचल कार्यालय, दुर्गापुर

संपादक

आनंद बिहारी साव
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)
मंडल कार्यालय, दुर्गापुर

संपादक मंडल

श्री इंद्रजीत दास
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)
मंडल कार्यालय, मालदा

श्री विकास कुमार साव
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)
मंडल कार्यालय, बर्द्धमान

श्री संजय गौंड
प्रबंधक (राजभाषा)
मंडल कार्यालय, नदिया

श्री सुनील प्रसाद
प्रबंधक (राजभाषा)
मंडल कार्यालय, मुर्शिदाबाद

श्रीमती स्मृति शर्मा
प्रबंधक (राजभाषा)
मंडल कार्यालय, पुरुलिया

श्री राज नारायण साव
प्रबंधक (राजभाषा)
मंडल कार्यालय, न्यू जलपाईगुड़ी

पीएनबी दुर्गावाहिनी

अनुक्रमणिका

क्र	शीर्षक	पृष्ठ
1	अंचल प्रबंधक का संदेश	4
2	उप अंचल प्रबंधक का संदेश	5
3	संपादकीय	6
4	सुस्वागतम	7
5	बदलते दौर में बैंकिंग प्रणाली : "जेन जी" की अपेक्षाएं और नवाचार की आवश्यकता	8
6	हिन्दी नवाचार और कृतिम बुद्धिमता नवाचार की दिशा में कदम	12
7	मंझधार (काव्य)	17
8	भरोसा परंपरा का, तकनीक भविष्य की : पीएनबी का डिजिटल बैंकिंग में योगदान	18
9	आतंक ही है (काव्य)	19
10	5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था और भारतीय बैंकिंग की भूमिका	20
11	निवेश योजना (काव्य)	21
12	मिशन डिजिटल इंडिया	22
13	डिजिटल दशक व तकनीकी नवाचार	28
14	पंजाब नैशनल बैंक (काव्य)	32
15	डिजिटल बैंकिंग ईकाइयां (DBU)	33
16	भारत के वीर जवान (काव्य)	34
17	"डिजिटल अरेस्ट" एक नया जाल	35
18	डिजिटल का भौतिक सुरक्षा का प्रभाव	36
	विविध गतिविधियां	
19	प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी का दौरा	38
20	अंचल कार्यालय दुर्गापुर द्वारा खेल उत्सव का आयोजन	38
21	अंचल कार्यालय दुर्गापुर द्वारा ताल-तरंग का आयोजन	39
22	विविध गतिविधियां	40
23	पत्रिका विमोचन	42
24	सुर्खियों में दुर्गापुर अंचल	43

हमारे अंचल द्वारा प्रकाशित पत्रिकाएँ

पंजाब नैशनल बैंक, अंचल कार्यालय, दुर्गापुर, रेड क्रॉस रोड, सिटी सेंटर, दुर्गापुर-7132016
दूरभाष : +918527199826, ई-मेल : zodgpraj@pnb.bank.in

नोट : पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं की मौलिकता एवं उनमें व्यक्त विचारों के लिए रचनाकार स्वयं उत्तरदायी है। अतः पत्रिका में व्यक्त विचारों के लिए संपादक, प्रबंधकीय मंडल तथा बैंक प्रबंधन किसी भी प्रकार से उत्तरदायी नहीं है। निःशुल्क व आंतरिक वितरण हेतु मुद्रित व प्रकाशित।

संजीव कुमार
अंचल प्रमुख

अंचल प्रबंधक का संदेश

प्रिय पाठकों,

"दुर्गावाहिनी" के इस विशेषांक डिजिटल बैंकिंग एवं तकनीकी नवाचार के माध्यम से आप सभी से संवाद करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है । आज का युग तीव्र तकनीकी परिवर्तन का युग है, जहाँ बैंकिंग सेवाएँ पारंपरिक सीमाओं को पार कर डिजिटल मंचों पर सशक्त रूप से स्थापित हो चुकी हैं । इंटरनेट बैंकिंग, मोबाइल बैंकिंग, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, डेटा एनालिटिक्स तथा साइबर सुरक्षा जैसे नवाचारों ने न केवल बैंकिंग प्रणाली को अधिक सुलभ एवं पारदर्शी बनाया है, बल्कि ग्राहकों के अनुभव को भी अभूतपूर्व रूप से सुदृढ़ किया है ।

डिजिटल बैंकिंग के इस विस्तार के साथ हमारी जिम्मेदारी और भी बढ़ जाती है कि हम तकनीक का उपयोग सुरक्षित, समावेशी एवं ग्राहक केंद्रित तरीके से करें । साइबर फ्रॉड जैसी चुनौतियाँ हमें सजग रहने का संदेश देती हैं । अतः यह आवश्यक है कि हम तकनीकी दक्षता के साथ-साथ ग्राहकों को भी जागरूक करें, ताकि डिजिटल माध्यमों का उपयोग विश्वास एवं सुरक्षा के साथ किया जा सके । इस परिवर्तित परिदृश्य में राजभाषा हिंदी की भूमिका भी अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है । तकनीकी नवाचार तभी व्यापक प्रभाव उत्पन्न कर सकते हैं जब वे जन - जन की भाषा में उपलब्ध हों ।

हमारे अंचल में यह सतत प्रयास रहा है कि डिजिटल सेवाओं, एप्लीकेशनों एवं संचार माध्यमों में राजभाषा का समुचित उपयोग सुनिश्चित किया जाए । इससे न केवल ग्राहकों की समझ और सहभागिता बढ़ती है, बल्कि बैंकिंग सेवाएँ वास्तव में जनोन्मुखी बनती हैं । मुझे यह बताते हुए गर्व हो रहा है कि हमारे अंचल कार्यालय ने बैंकिंग व्यवसाय के साथ - साथ राजभाषा कार्यान्वयन में भी उल्लेखनीय उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं । क्षेत्रीय एवं प्रधान कार्यालय स्तर पर प्राप्त पुरस्कार हमारी टीम के समर्पण, अनुशासन एवं उत्कृष्ट कार्यसंस्कृति के प्रतीक हैं । ये सम्मान हमें न केवल प्रेरित करते हैं, बल्कि भविष्य में और बेहतर प्रदर्शन करने के लिए मार्गदर्शन भी प्रदान करते हैं ।

हमारा लक्ष्य केवल व्यावसायिक वृद्धि तक सीमित नहीं है, बल्कि एक ऐसी सशक्त, पारदर्शी एवं ग्राहक हितैषी बैंकिंग प्रणाली का निर्माण करना है, जिसमें तकनीक और भाषा दोनों का संतुलित समन्वय हो । डिजिटल नवाचारों को अपनाते हुए हम यह सुनिश्चित करें कि कोई भी वर्ग चाहे वह ग्रामीण हो या शहरी बैंकिंग सुविधाओं से वंचित न रहे ।

मैं, "दुर्गावाहिनी" की सम्पूर्ण संपादकीय टीम को इस उत्कृष्ट विशेषांक के प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई देता हूँ। मुझे विश्वास है कि यह अंक पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायक एवं उपयोगी सिद्ध होगा । आइए, हम सभी मिलकर डिजिटल युग की इस यात्रा में नवाचार, सुरक्षा और राजभाषा के समन्वय के साथ आगे बढ़ें तथा अपने अंचल को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाएँ ।

सादर,

(संजीव कुमार)

राजेश कुमार प्रमाणिक
उप अंचल प्रमुख

उप अंचल प्रबंधक का संदेश

प्रिय पाठकों,

मुझे अत्यंत हर्ष है कि "दुर्गवाहिनी" पत्रिका का अंक – 6 "डिजिटल बैंकिंग एवं तकनीकी नवाचार विशेषांक" के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है । वर्तमान समय में बैंकिंग क्षेत्र तीव्र गति से परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है, जहाँ डिजिटल तकनीक न केवल हमारी कार्यप्रणाली को सरल बना रही है, बल्कि ग्राहकों के अनुभव को भी अधिक सुरक्षित, तेज एवं पारदर्शी बना रही है ।

डिजिटल बैंकिंग के विस्तार ने हमारे समक्ष नई संभावनाएँ प्रस्तुत की हैं । इंटरनेट बैंकिंग, मोबाइल बैंकिंग, यूपीआई, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एवं डेटा एनालिटिक्स जैसे नवाचारों के माध्यम से हम अधिकाधिक ग्राहकों तक अपनी सेवाएँ पहुँचा पा रहे हैं । साथ ही, इन तकनीकों के प्रभावी उपयोग से बैंक के व्यवसायिक लक्ष्यों जैसे जमा वृद्धि, ऋण वितरण, डिजिटल लेन-देन में वृद्धि तथा ग्राहक संतुष्टि को प्राप्त करने में महत्वपूर्ण सहायता मिल रही है ।

हालाँकि, तकनीकी प्रगति के साथ साइबर सुरक्षा की चुनौतियाँ भी सामने आई हैं । अतः यह आवश्यक है कि हम डिजिटल लेन - देन के प्रति सजग रहें तथा ग्राहकों को भी सुरक्षित बैंकिंग के प्रति जागरूक करें । हमारी जिम्मेदारी है कि हम नवाचार को अपनाते हुए सुरक्षा मानकों का पूर्णतः पालन करें, जिससे ग्राहकों का विश्वास और अधिक सुदृढ़ हो ।

बैंकिंग लक्ष्यों की प्राप्ति में प्रत्येक अधिकारी एवं कर्मचारी की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है । हमें टीम भावना के साथ कार्य करते हुए अपने निर्धारित लक्ष्यों को न केवल प्राप्त करना है, बल्कि उन्हें उत्कृष्टता के साथ पार भी करना है । डिजिटल साधनों का अधिकतम उपयोग, ग्राहक केंद्रित दृष्टिकोण तथा समयबद्ध सेवा प्रदान करना हमारे सफलता के प्रमुख आधार हैं।

इस संदर्भ में राजभाषा हिंदी का महत्व भी अत्यंत विशेष है । राजभाषा के प्रभावी प्रयोग से हम अधिकाधिक ग्राहकों तक अपनी बात सहजता से पहुँचा सकते हैं । हिंदी के प्रयोग से न केवल कार्य की पारदर्शिता बढ़ती है, बल्कि ग्राहकों के साथ संवाद भी सुदृढ़ होता है । मैं सभी से आग्रह करता हूँ कि वे अपने दैनिक कार्यों में राजभाषा का अधिकाधिक उपयोग करें तथा बैंक की राजभाषा नीति के अनुरूप कार्य करते हुए इसे प्रोत्साहित करें ।

"दुर्गवाहिनी" का यह विशेषांक न केवल ज्ञानवर्धक होगा, बल्कि हमें नई दिशा एवं प्रेरणा भी प्रदान करेगा । मुझे विश्वास है कि इसमें संकलित लेख एवं विचार हम सभी को डिजिटल युग की चुनौतियों एवं अवसरों को समझने में सहायक होंगे ।

अंत में, मैं इस पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी सहयोगियों को हार्दिक बधाई देता हूँ एवं आशा करता हूँ कि हम सभी मिलकर बैंक को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाने में सफल होंगे ।

सादर,

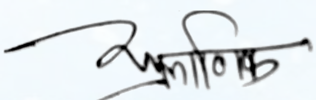

(राजेश कुमार प्रमाणिक)

आनंद बिहारी साव
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)

संपादकीय

नमस्कार,

“दुर्गवाहिनी” पत्रिका के इस विशेषांक में आप सभी का हार्दिक स्वागत है । डिजिटल युग के इस परिवर्तनकारी दौर में भाषा, तकनीक और बैंकिंग तीनों का समन्वय एक नए भारत की परिकल्पना को साकार कर रहा है । हिंदी अब केवल भारत की ही नहीं, बल्कि विश्व स्तर पर अपनी पहचान बनाने की दिशा में अग्रसर है । ऐसे समय में डिजिटल चुनौतियों के साथ - साथ अवसरों को समझना अत्यंत आवश्यक हो जाता है ।

विश्व की भाषाओं के तुलनात्मक अध्ययन से स्पष्ट होता है कि भाषाओं की वैश्विक स्वीकार्यता का मुख्य कारण उनका तकनीकी प्लेटफार्मों पर व्यापक उपयोग, मानकीकरण एवं सरल उपलब्धता है । हिंदी भी इन सबके बीच अपनी विशिष्ट पहचान बनाए हुए है । यह विश्व की प्रमुख भाषाओं में से एक है, जिसकी पहुँच करोड़ों लोगों तक है । हिंदी की सबसे बड़ी विशेषता इसकी सहजता, लचीलापन और अन्य भाषाओं के शब्दों को आत्मसात करने की क्षमता है । किंतु डिजिटल युग में हिंदी के समक्ष कई चुनौतियाँ हैं जैसे तकनीकी सामग्री की कमी, जटिल शब्दावली, और अंग्रेज़ी का वर्चस्व ।

फिर भी, संभावनाओं के द्वार पूर्णतः खुले हैं । आज गूगल, माइक्रोसॉफ्ट एवं अन्य वैश्विक तकनीकी कंपनियाँ हिंदी सहित भारतीय भाषाओं के विकास में निवेश कर रही हैं । वॉयस रिकग्निशन, मशीन ट्रांसलेशन और लोकलाइजेशन के माध्यम से हिंदी उपयोगकर्ताओं की संख्या तेजी से बढ़ रही है । डिजिटल बैंकिंग, ई-गवर्नेंस एवं ऑनलाइन शिक्षा में हिंदी का प्रयोग आमजन तक तकनीक की पहुँच को सरल बना रहा है ।

वहीं भारतीय भाषाओं में बैंकिंग सेवाओं की उपलब्धता ग्रामीण एवं अर्ध - शहरी क्षेत्रों में प्रभावी सिद्ध हो रही है, जहाँ भाषा ही ग्राहकों और तकनीक के बीच सेतु का कार्य करती है । बैंक द्वारा राजभाषा हिंदी के संवर्धन के साथ अन्य भारतीय भाषाओं को महत्व देना एक सराहनीय प्रयास है । यह न केवल बैंक की ग्राहक हितैषी नीति को दर्शाता है, बल्कि “एक भारत, श्रेष्ठ भारत” की भावना को भी सशक्त करता है ।

डिजिटल युग में जहां बैंकिंग सेवाएँ ऑनलाइन हो रही हैं, वहीं साइबर फ्रॉड, फिशिंग एवं डिजिटल धोखाधड़ी की घटनाएँ भी बढ़ने लगी हैं । अतः यह आवश्यक है कि ग्राहकों को उनकी अपनी भाषा में जागरूक किया जाए, ताकि वे सुरक्षित एवं सतर्क रहते हुए कार्य करे । इस दिशा में हमारे बैंक द्वारा विभिन्न जागरूकता अभियानों के माध्यम से सराहनीय कार्य किया जा रहा है ।

“दुर्गवाहिनी” का यह अंक डिजिटल बैंकिंग, तकनीकी नवाचार एवं भारतीय भाषाओं के समन्वय को समर्पित है । हमें विश्वास है कि यह प्रयास हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं को तकनीकी रूप से सशक्त बनाने तथा उन्हें वैश्विक मंच पर स्थापित करने में सहायक सिद्ध होगा ।

(आनंद बिहारी साव)

सुस्वागतम

श्री रविन्द्र कुमार
उप महाप्रबंधक, अंचल कार्यालय दुर्गापुर

श्री राजेश श्रीवास्तव
उप महाप्रबंधक, अंचल कार्यालय दुर्गापुर

श्री सत्येन्द्र मिश्र
मंडल प्रमुख, दुर्गापुर

मो. ज़िशान अहमद
मंडल प्रमुख, मुशिर्दाबाद

सुश्री समापिका चौधरी
मंडल प्रमुख पुरुलिया

श्री ब्रज किशोर साहु
सहायक महाप्रबंधक एमसीसी प्रमुख दुर्गापुर

श्री मनीष कुमार यादव
सहायक महाप्रबंधक, एमसीसी प्रमुख सिलीगुड़ी

श्री अनिल कुमार
उप मंडल प्रमुख, मण्डल कार्यालय मालदा

अनिल साह
अधिकारी
पाण्डेश्वर शाखा

बदलते दौर में बैंकिंग प्रणाली: "जेन ज़ी" की अपेक्षाएँ और नवाचार की आवश्यकता

वर्तमान समय में इस विज्ञान व प्रौद्योगिकी युग दौर में मानव जीवन का ऐसा कोई क्षेत्र नहीं जहाँ तकनीकी प्रभाव न पड़ा हो। तो फिर बैंकिंग सेक्टर भी इस परिवर्तन से अछूता नहीं रहने वाला था। कुछ समय पहले देखा जाए तो पारंपरिक बैंकिंग मॉडल जिसमें लंबी-लंबी कतारे हुआ करती थी, इसके अतिरिक्त कागजी प्रक्रियाएं और सीमित बैंकिंग समय भी शामिल थे, परंतु वर्तमान समय में डिजिटल के तीव्र दौर में बैंकिंग द्वारा मोबाइल बैंकिंग ऐप्स, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) आधारित सेवाओं और लेनदेन के क्षेत्र में सुरक्षा लाने के लिए ऑनलाइन सुविधाओं की ओर बढ़ रहे हैं। जहां एक ओर इस डिजिटल युग ने न केवल बैंकिंग की संरचना को प्रभावित किया है, बल्कि उपभोक्ताओं की अपेक्षाओं और व्यवहार को भी सम्पूर्णतापूर्वक बदल दिया है।

इसी संदर्भ की चर्चा करते समय अगर "जेन जी" (यानी 1997 और उसके बाद जन्म पीढ़ी) को सम्मिलित किया जाए, तो हम देखेंगे कि यह पीढ़ी डिजिटल दौर में जन्मी होने के कारण स्मार्टफोन, इंटरनेट और सोशल मीडिया के साथ भारी मात्रा में जुड़ी हुई है। इस प्रकार "जेन जी" के लिए यह पारदर्शी और सुरक्षित डिजिटल सेवाएँ कोई सुविधा नहीं बल्कि एक बुनियादी आवश्यकता बन बैठी हैं। यह ऐसी बैंकिंग सेवाओं को चाहते हैं जो कम से कम क्लिक में पूरी हो जाएँ और जटिलता से छुटकारा पाकर तुरंत उपलब्ध हों। साथ ही साथ यह पीढ़ी वर्तमान युग में खुद की निजी डेटा की सुरक्षा और वित्तीय पारदर्शिता को अत्यधिक महत्व देती है। स्पष्ट रूप में कहा जाए तो इस पीढ़ी को ऐसे बैंक आकर्षित किया करते हैं जो तकनीकी नवाचार के माध्यम से काफी अनुभवशील हो और अधिक नियंत्रण प्रदान कर सकें। इसका मुख्य उद्देश्य यह है कि बदलते डिजिटल दौर में "जेन जी" की आवश्यकताओं और अपेक्षाओं को ध्यान में रखते हुए बैंकिंग सेक्टर किस प्रकार से अपने आप को ढाल रहा है। तर्क यह है कि अगर बैंक भविष्य में उपभोक्ताओं को आकर्षित करना चाहते हैं, तो उन्हें पारदर्शिता, डिजिटल नवाचार इत्यादि जैसे विषयों को प्राथमिकता देनी होगी।

बदलते दौर में बैंकिंग प्रणाली का विकास - वर्तमान समय में बैंकिंग प्रणाली का दुनियाँ भर में तेजी से बदलाव दिखाई दे रहा है जिसका मूल कारण जेन ज़ी द्वारा सुविधा, गति और पारदर्शिता को प्राथमिकता देना है। पहले पारंपरिक बैंकिंग के लेनदेन के लिए शाखाओं में जाना पड़ता परंतु अब इस तकनीकी और प्रौद्योगिकी के युग में डिजिटल बैंकिंग के परिवर्तन से न केवल उपयोगकर्ताओं को अधिक स्वतंत्रता दी है, बल्कि बैंकिंग सेवाओं को अत्यधिक प्रतिस्पर्धी और नवाचार की दिशा में आगे बढ़ाया है।

पारंपरिक बैंकिंग से डिजिटल बैंकिंग तक का सफर - पहले देखा जाए तो बैंक का सारा कामकाज कागज और शाखाओं पर आधारित हुआ करता था। परंतु 1990 के बाद तकनीकी क्षेत्र में प्रगति तथा 2000 के बाद इंटरनेट के प्रसार ने बैंक को डिजिटल रूप में ढाल दिया। जिसके कारण वर्तमान में ग्राहक एटीएम, डेबिट कार्ड, क्रेडिट कार्ड और ऑनलाइन ट्रांसफर जैसी सुविधाओं के कारण पहले की अपेक्षा और तेजी से लेन-देन कर सकते हैं।

2000 के बाद तकनीकी प्रगति : इंटरनेट और मोबाइल बैंकिंग- 2000 साल के बाद बैंकिंग क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव का मूल कारण आईटी सेक्टर के विस्तार और स्मार्टफोन की उपलब्धता से देखा जा सकता है। आज इंटरनेट सेवाओं के प्रसार ने ऑनलाइन बैंकिंग को आम जन-जन तक पहुंचा दिया है, जिसके कारण ग्राहक अब घर बैठे ही बिल का भुगतान, धन स्थानांतरण, बैलेंस जांच और निवेश भी कर सकते हैं। इसके पश्चात स्मार्टफोन ही वह वस्तु है जिसने बैंकिंग को पूर्ण रूप से बदल दिया हैं और जेन ज़ी इस प्रगति का हाथ थामे मोबाइल एप्स के सहारे बैंकिंग सेवाओं का लाभ उठा रहे हैं। इन सब की अतिरिक्त बायोमेट्रिक लॉगिन, रियल टाइम अलर्ट और त्वरित भुगतान जैसी तकनीकी सुविधाएँ विशेष रूप से युवा पीढ़ी को आकर्षित कर रही हैं।

कोविड-19 के बाद डिजिटल ट्रांजेक्शन का विस्तार -

कोविड-19 महामारी के दौरान सामाजिक दूरी में डिजिटल पेमेंट ने बैंक और उसके ग्राहकों को तकनीकी के क्षेत्र में और करीब ले आया। यही कारण है कि भारत में यूपीआई, QR कोड भुगतान, वॉलेट इत्यादि का उपयोग पहले की अपेक्षा और तीव्र गति से होने लगा है, जिससे भारत दुनिया में सबसे तेज गति से डिजिटल भुगतान अपनाने वाले देशों में शामिल है। इस प्रकार महामारी ने यह सिखाया है कि डिजिटल बैंकिंग केवल एक विकल्प मात्र नहीं बल्कि आवश्यकता बन गया है।

वैश्विक और भारतीय बैंकिंग में तकनीकी नवाचार - दुनिया भर की बात करें तो बैंक के क्षेत्र में एआई, मशीन लर्निंग, रोबोटिक प्रोसेस ऑटोमेशन, ब्लॉकचेन और ओपन बैंकिंग जैसे नवाचारों को अपना रहे हैं। भारत में भी आरबीआई और सरकार के डिजिटल इंडिया मिशन ने इनोवेशन को काफी बढ़ावा दिया है। इस क्षेत्र में जेन ज़ी सुरक्षा, तेजी और व्यक्तिगत अनुभव को चाहती है जिससे बैंकिंग क्षेत्र में यह आवश्यक हो जाता है कि वे नए-नए फीचर और सरल इंटरफेस को विकसित करें। इस प्रकार बदलते दौर में बैंकिंग प्रणाली न केवल डिजिटल की ओर अग्रसर हो रही है बल्कि जेन ज़ी की अपेक्षाओं के अनुरूप अधिक तेज और सुरक्षित भी बन रही है।

जेन ज़ी की विशेषताएँ और उपभोग व्यवहार - 1997 से 2012 के बीच जन्मी पीढ़ी "जेन ज़ी" संपूर्ण रूप से डिजिटल वातावरण में पली-बढ़ी होने के कारण बचपन से ही स्मार्टफोन, इंटरनेट और सोशल मीडिया जैसी चीजे उनके लिए खिलौने समान हो गए हैं। जिससे उनके जीवन शैली और उपभोग व्यवहार पूर्ववर्ती पीढ़ियों से बिल्कुल भिन्न दिखाई देता हैं। उनके लिए तकनीक न केवल सुविधाओं का माध्यम है अपितु रोज़मर्रा की जिंदगी का एक अभिन्न हिस्सा बन चूका है। आज की नई पीढ़ी पारंपरिक बैंकिंग की लंबी कागजी प्रक्रियाओं और और उसमें लगने वाले अत्यधिक समय से परेशान होती जा रही है। इसलिए वे चाहती है कि खाता खोलने से लेकर भुगतान तथा निवेश की समस्त प्रक्रियाएं कुछ ही क्लिक में मोबाइल ऐप से पूरी हो जाए। इसको ध्यान में रखते हुए जेन ज़ी की सबसे पहली पसंद वही बैंक है जो तेज, सरल और कम लागत वाली डिजिटल सेवाएं प्रदान करें। इन सभी चीजों को ध्यान में रखते हुए बैंकिंग क्षेत्र में वर्चुअल असिस्टेंट और ऐप आधारित समाधान उनके दैनिक वित्तीय व्यवहार का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुका है। इसी के साथ-साथ जेन ज़ी वर्तमान समय में भरोसा और सुरक्षा के मुद्दे पर काफी संवेदनशील है। साइबर जोखिमों के विषय को लेकर वे ऐसे बैंकों पर भरोसा करती है जो सुरक्षित लॉग-इन, बायोमेट्रिक ऑथेंटिकेशन, रियल टाइम अलर्ट जैसी सुविधाओं का प्रयोग करते हो। अंततः जेन जी की प्राथमिकता तीव्रता, सरलता, संरक्षण और व्यक्तिगत डिजिटल से होने के कारण बैंकिंग सेक्टर को अपने मॉडल तकनीक और सेवा ढांचे में बदलना अनिवार्य हो गया है। जो बैंक AI चैटबॉक्स, मोबाइल ऐप जैसी प्रक्रियाओं को अपनाते हुए उपयोगकर्ता के अनुभव को बेहतर बनाएंगे वहीं बैंक जेन जी का भरोसा जीतकर उन्हें भविष्य में भी अपनी ओर आकर्षित कर पाएंगे।

जेन ज़ी की बैंकिंग आवश्यकताएँ और अपेक्षाएँ - आज के समय में जेन ज़ी सबसे अधिक डिजिटल रूप से सक्रिय और तकनीकी सक्षम उपभोक्ता समूह के रूप में मानी जाती हैं। बैंकिंग सेवाओं के प्रति उनके दृष्टिकोण में गति, सरलता और व्यक्तिगत अनुभव की स्पष्ट रूप से मांग दिखाई पड़ती है। यही कारण है कि आधुनिक बैंकिंग प्रणाली को जेन ज़ी के जरूरत को ध्यान में रखते हुए लगातार नवाचार करने की आवश्यकता है।

संपूर्ण रूप से मोबाइल-फर्स्ट बैंकिंग - जेन ज़ी द्वारा मोबाइल के अत्यधिक प्रयोग से उनके जीवन के छोटे बड़े कार्य में सरलता और तीव्रता आ गई है जिसके कारण बैंक की शाखाओं में जाना समय की बर्बादी माना जाता है। इसलिए वे चाहते हैं कि खाता खोलने से लेकर लेन-देन, निवेश तथा लोन आवेदन तक की सारी सुविधाएँ मोबाइल ऐप के जरिए ही उपलब्ध हो। जिससे वे आसानी और तीव्रता से बैंकिंग कार्य को संपन्न कर सके।

24×7 ग्राहक सेवा - जेन ज़ी के लिए सुविधाओं की सूची में 24×7 ग्राहक सेवा भी शामिल है। वे AI चैट बॉक्स और वर्चुअल असिस्टेंट की मदद से तुरंत समाधान की उम्मीद रखते हैं, क्योंकि उन्हें लंबा इंतजार ग्राहक सेवा प्रक्रिया के लिए आकर्षित नहीं करती।

त्वरित भुगतान सेवाएं - आज भारतवर्ष में सिर्फ जेन जी ही नहीं बल्कि अन्य पीढ़ी भी त्वरित भुगतान सेवाओं का लाभ उठा रहे हैं। UPI डिजिटल वॉलेट,QR भुगतान जैसी सेवाएं उनके दिन दैनिक जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुकी है । जिससे क्षणभर में पैसे भेजने और प्राप्त करने की सुविधा को आधारभूत बैंकिंग मानते हैं।

पर्सनलाइज्ड़ ऑफर और वित्तीय सलाह - पर्सनलाइज्ड़ ऑफर और वित्तीय सलाह पर बल देते हुए जेन ज़ी यह चाहती है कि बैंक उनके खर्च व्यवहार, निवेश पैटर्न और वित्तीय लक्ष्य को समझ कर उन्हें बजट मैनेजमेंट, सेविंग गाइड जैसे अच्छे से अच्छा सुझाव दें। इस विषय पर AI आधारित एनालिटिक्स महत्वपूर्ण भूमिका

निभा सकता है।

पारदर्शी कम शुल्क वाली सेवाएँ - बैंकिंग के क्षेत्र में जेन ज़ी को केंद्र में रखकर देखा जाए तो छुपे हुए शुल्क जटिल नियम या अनावश्यक चार्ज उन्हें तुरंत किसी दूसरे बैंक की ओर मोड़ दे सकते हैं। वर्तमान तकनीकी और प्रौद्योगिकी के तीव्र युग में वे स्पष्ट सरल और बिना बोझ वाली बैंकिंग पसंद किया करते हैं।

पर्यावरण अनुकूल और सामाजिक उत्तरदायित्व वाले बैंक: पर्यावरण और समाज की प्रति भी जेन ज़ी अत्यधिक संवेदनशील हो गई है, इसी कारणवश में ऐसे बैंकों को प्राथमिकता देते हैं जो पर्यावरण अनुकूल और सामाजिक उत्तरदायित्व वाली नीति अपनाते हो। यह पीढ़ी पेपरलेस प्रक्रियाओं की समस्या को समझते हुए इसका विरोध करती है और डिजिटल दस्तावेज पर अधिक से अधिक बल देती है। इसके अलावा सामाजिक भलाई, वित्तीय समावेशन और पारदर्शिता पर काम करने वाले संस्थानों पर उनका दृढ़ विश्वास रहता है। इस नई पीढ़ी का मानना है कि बैंक न केवल वित्तीय सेवा प्रदाता, बल्कि समाज और पर्यावरण के लिए सकारात्मक प्रभाव डालने वाले संस्थान के रूप में भी खड़ा हो सकता है । यही सोच उन्हें "सस्टेनेबल बैंकिंग" की ओर आकर्षित करती है।

सुगम ऑनबोर्डिंग:KYC और अकाउंट ओपनिंग का सरलीकरण - जेन ज़ी के सबसे बड़ी मांगों में से एक सुगम ऑनबोर्डिंग का क्षेत्र भी है। इस पीढ़ी के अनुसार KYC और अकाउंट ओपनिंग की समस्त प्रक्रियाएं पूरी तरह से डिजिटल, तेज और बिना किसी रूकावट व जटिलता के होनी चाहिए, क्योंकि यही सभी चीज़े बैंकिंग कार्यों को सरल और सुगम बनाती है। जेन ज़ी उम्मीद करती है कि बैंक कुछ ही मिनटों में खाता खोलने की सुविधा दें और तुरंत उपयोग योग्य सेवाएँ उपलब्ध कराएँ। कुल मिलाकर कहा जाय तो जेन ज़ी बैंकिंग के क्षेत्र में तीव्रता, सुरक्षा और व्यक्तिगत बैंकिंग के अनुभव की अपेक्षा रखती है। अतः जो बैंकिंग अपेक्षाओं को पूरा करते हुए नवाचार अपनाएँगे, वही भविष्य की बैंकिंग दुनियाँ में सर्वश्रेष्ठ कहलाएंगे।

वर्तमान बैंकिंग प्रणाली की चुनौतियाँ - जहाँ एक तरफ जेन ज़ी तकनीकी और प्रौद्योगिकी का हाथ थामे तीव्रता से डिजिटल बैंकिंग की ओर आगे बढ़ रही है वहीं दूसरी तरफ मौजूदा बैंकिंग प्रणाली कई चुनौतियों का सामना कर रही है जो कि इस प्रकार है-

1. सर्वप्रथम पुरानी कोर बैंकिंग प्रणाली प्रगति की दिशा में मुख्य चुनौती है जिसके तहत कई बैंकों में पुराने सॉफ्टवेयर और धीमे डेटाबेस के कारण डिजिटल सेवाओं का विस्तार नई पीढ़ी के अनुरूप नहीं हो पता। इसलिए इन सिस्टमों को अपग्रेड करना समय, लागत और विशेषज्ञता - तीनों की मांग करता है।
2. दूसरी बड़ी चुनौती के रूप में बैंकिंग क्षेत्र में साइबर सुरक्षा का बढ़ता खतरा जेन जी के लिए एक चिंता का विषय है। चुकि यह पीढ़ी अपनी सुरक्षा पर ज्यादा संवेदनशील है इसलिए ये जरूरी हो जाता है कि बैंकिंग सेक्टर ग्राहकों की डेटा सुरक्षा का ध्यान रखें।
3. तीसरी चुनौती ग्रामीण और अर्ध शहरी क्षेत्रों में डिजिटल असमानता जैसे इंटरनेट की धीमी गति, स्मार्टफोन की कम पहुंच, डिजिटल साक्षरता की कमी इत्यादि के रूप में मौजूद हैं। जब तक इन क्षेत्रों में डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर और जागरूकता नहीं बढ़ेगी, तब तक पूर्ण डिजिटल बैंकिंग संभव नहीं होगी।
4. चौथी सबसे बड़ी चुनौती अपर्याप्त डिजिटल कौशल है। जिसके कारण कई कर्मचारी अभी पारंपरिक तरीकों पर निर्भर है और नई तकनीक से अनभिज्ञ है। जिससे AI, डाटा एनालिटिक्स, साइबर सुरक्षा और डिजिटल ग्राहक सेवा से जुड़े कौशल विकसित करना वर्तमान समय की जरूरत बन गई है।
5. अंततः नियामक सीमाएँ भी डिजिटल नवाचार को नियंत्रित करती है। बैंक को RBI और अन्य संस्थाओं द्वारा निर्धारित नियमों का पालन करना होता है, जिससे नए प्रयोग और तकनीकी बदलाव में समय लग सकता है। इस प्रकार हम देख सकते हैं कि उपर्युक्त चुनौतियों का समाधान किए बिना बैंकिंग सेक्टर जैन ज़ी की अपेक्षाओं पर खड़ा नहीं उतर सकता।

नवाचार की आवश्यकता - आधुनिक बैंकिंग समाधान-वर्तमान डिजिटल युग में बैंक के क्षेत्र में तेजी से तकनीकी बदलाव को देखा जा रहा है क्योंकि जेन ज़ी तेज,पारदर्शी और सहज बैंकिंग अनुभव की अपेक्षा रखते हैं। ऐसे में नवाचार पारंपरिक बैंकिंग मॉडल के लिए केवल विकल्प नहीं, बल्कि प्रतिस्पर्धा और निरंतर विकास के लिए अनिवार्य हो गया है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) एवं मशीन लर्निंग आधारित बैंकिंग - आधुनिक बैंकिंग के आधार के रूप में कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मशीन लर्निंग अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। चैट बॉक्स ग्राहकों को त्वरित सहायता और 24×7 सेवा प्रदान कर रहे हैं। साथ ही साथ धोखाधड़ी पहचान सिस्टम रियल टाइम डेटा विश्लेषण से

संदिग्ध गतिविधियों को तुरंत रोकने में मदद कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त क्रेडिट स्कोरिंग भी है जो कृत्रिम बुद्धिमत्ता खर्च पैटर्न और डिजिटल व्यवहार को ध्यान में रखकर अधिक सटीक और निष्पक्ष मूल्यांकन उपलब्ध कराता है।

ब्लॉकचेन और क्रिप्टो-इकोसिस्टम - ब्लॉकचेन एक ऐसी तकनीकी सुविधा है जिससे सुरक्षा, तीव्रता और पारदर्शी लेनदेन को सुनिश्चित करती है। इसमें स्मार्ट कॉन्ट्रैक्ट वित्तीय कार्यों को स्वचालित और त्रुटि रहित बनाते हैं साथ ही साथ, क्रिप्टो इकोसिस्टम के बढ़ते प्रभाव से बैंक डिजिटल एसेट सुरक्षा और उपयोग में नवाचार कर रहे हैं।

ओपन बैंकिंग और API आधारित सेवाएँ - जब बैंक ग्राहकों की अनुमति से फिनटेक जैसे कंपनियों के साथ डाटा साझा करते हैं तो वह ओपन बैंकिंग के अंतर्गत आते हैं। इसके अतिरिक्त API आधारित सेवाएँ बजटिंग टूल्स, तेज भुगतान समाधान और लोन तुलना जैसी सुविधाएं प्रदान करती हैं जिससे यह पारदर्शी व्यक्तिगत बैंकिंग अनुभव को बढ़ावा देता है।

नियो-बैंक का उदय - वर्तमान तकनीकी और प्रौद्योगिकी युग में नियो बैंक पूरी तरह से डिजिटल बैंक है जो बिना शाखों के तेज और किफायती सेवाएं ग्राहकों को उपलब्ध कराते हैं। न्यूनतम शुल्क और त्वरित ऑन बोर्डिंग जैसी के कारण जेन ज़ी इसके और भी नजदीक आ गए हैं।

डेटा एनालिटिक्स और पर्सनल वित्त प्रबंधन - आजकल बैंक डेटा एनालिटिक्स का उपयोग कर रहे हैं जिससे ग्राहकों को स्मार्ट वित्तीय निर्णय लेने में कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ता। जहाँ खर्च विश्लेषण उपयोगकर्ता के लेनदेन पैटर्न को स्पष्ट रूप से दर्शाता है तो वहीं निवेश सुझाव व्यक्तिगत लक्ष्य और जोखिम क्षमता के अनुसार तैयार किए जाते हैं।

डिजिटल सुरक्षा में सुधार - डिजिटल बैंकिंग के क्षेत्र में सुरक्षा सबसे महत्वपूर्ण पहलू है। बायोमेट्रिक ऑथेंटिकेशन लॉगिन को सुरक्षित और सहज बनाता है। मल्टी फैक्टर ऑथेंटिकेशन अनाधिकृत पहुंच को रोककर ग्राहकों को विश्वसनीय बनाता है।

ग्रीन बैंकिंग और सस्टेनेबल फाइनेंस - पर्यावरण को लेकर जैन ज़ी में काफी सजग है, इसलिए बैंक पेपरलेस बैंकिंग, ग्रीन कार्ड और सस्टेनेबल प्रोजेक्ट में निवेश को बढ़ावा दे रहे हैं। इस प्रकार बैंक जेन ज़ी की अपेक्षाओं को पूरा करते हुए एक सुरक्षित और भविष्य उन्मुक्त वित्तीय ढांचा तैयार कर रहा है।

केस स्टडी या उदाहरण - समूचे संसार में जिस प्रकार बैंकिंग प्रणाली में तीव्रता का दृश्य देखा जा रहा है, उससे भारतवर्ष भी कहां अछूता रहने वाला था। यहाँ जेन ज़ी के डिजिटल फर्स्ट सोच ने वित्तीय सेवाओं की परिभाषा ही बदल दी। क्योंकि इनका झुकाव वहीं होता है जिसमें तीव्रता, सरलता, पारदर्शी और मोबाइल केंद्रित बैंकिंग परीसेवा हो। इन्हीं मांग ने UPI को एक क्रांतिकारी बदलाव की तरह उभारा-जहां तुरंत भुगतान, जीरो चार्ज और QR आधारित लेनदेन में पारंपरिक बैंक को चुनौती दी। जैन जी की अपेक्षाओं और जरूरत को मध्य नजर रखते हुए ही भारत में Paytm, PhonePe, Jupiter और Fi जैसे नियो बैंकों ने सरल इंटरफेस, स्मार्ट सेविंग टूल, खर्च विश्लेषण और बिना झंझट अकाउंट खोलने की सुविधा देकर नए मानक स्थापित किए हैं। विश्व स्तर पर भी यह बदलाव स्पष्ट है, Revolt, N26 और Monzo-तीनों ने डिजिटल-ओनली बैंकिंग को मुख्य धारा में लाया और Revolt ने मल्टी-करेंसी अकाउंट और कम शुल्क वाले अंतरराष्ट्रीय भुगतान देकर युवाओं को अपनी तरफ आकर्षित कर लिया। N26 ने पेपरलेस बैंक का मॉडल बनाकर बैंकिंग को बेहद सहज व सुलभ बनाया, जबकि Monzo ने रियल टाइम नोटिफिकेशन और बजटिंग टूल के जरिए पारदर्शिता को अपनी सबसे बड़ी अद्वितीय विक्रय बिंदु बनाया। इन सभी उदाहरणों से यह स्पष्ट होता है कि जेन ज़ी सिर्फ बैंक नहीं, बल्कि एक व्यक्तिगत स्मार्ट और तुरंत उपलब्ध वित्तीय अनुभव चाहती है- और यही भविष्य में बैंकिंग प्रणाली का मार्ग तय करेगा।

वर्तमान में तकनीकी और प्रौद्योगिकी के इस बदलते दौर में बैंकिंग प्रणाली तभी प्रासंगिक रह सकती है, जब वह जेन ज़ी की बदलती प्राथमिकताओं और तकनीकी तकनीकी समझ को अपनाए। यह पीढ़ी सुरक्षित, पारदर्शी, तेज और पूरी तरह डिजिटल अनुभव चाहती है जो न केवल वित्तीय लेन-देन बल्कि जीवन शैली से भी जुड़ी रहनी चाहिए। इस तरह यह अत्यंत जरूरी हो गया है कि बैंकिंग के क्षेत्र में नवाचार अपनाया जाए। वर्तमान में जेन ज़ी सुरक्षा के मामले में काफी सजग हैं। इसलिए सुरक्षा और डाटा प्राइवेसी को केंद्र में रखकर उसे पर ज्यादा से ज्यादा ध्यान दिया जाए क्योंकि डिजिटल सुविधा तभी सार्थक होती है जब उस पर भरोसा किया जा सके। बैंकिंग संस्थाओं को ग्राहक केंद्रित दृष्टिकोण अपनाते हुए उपयोगकर्ता व्यवहार, जरूरत और तकनीकी रुझानों को वास्तविक समय में समझने की क्षमता विकसित करनी होगी। अंततः कहा जाए तो डिजिटल बैंकिंग 2.0 की ओर कदम बढ़ाना सिर्फ तकनीकी उन्नयन नहीं बल्कि जेन ज़ी की सोच और अपेक्षाओं के अनुरूप बैंकिंग अनुभव को नए सिरे से गढ़ने की प्रक्रिया है, जिसके प्रयास से सुविधा, गति, सुरक्षा और नवाचार मिलकर आधुनिक ग्राहक केंद्रित बैंकिंग का आधार बनाते हैं।

ई प्रकाश
प्रबंधक
मंडल कार्यालय, पुरुलिया

हिन्दी भाषा और कृत्रिम बुद्धिमता नवाचार की दिशा में कदम

कृत्रिम बुद्धिमता के द्वारा मशीन को बुद्धि दी गयी है जिससे वह बिना मनुष्य के मनुष्य की तरह काम कर सके, सोच सके और निर्णय ले सके। कृत्रिम बुद्धिमता से जुड़कर हिन्दी भाषा ने अनेक नए आयाम स्थापित किए है। विश्व स्तर पर हिंदी को स्थापित करने में इस कृत्रिम मेधा की बड़ी भूमिका रही है। मशीन अनुवाद के कारण, भारतीय ज्ञान परंपरा हिंदी भाषा के माध्यम से देश ही नहीं विश्व के कोने-कोने तक प्रसारित हुई है। शिक्षा, कृषि, चिकित्सा, प्रौद्योगिकी, योग आदि ज्ञान कृत्रिम मेधा के माध्यम से आम जन तक पहुंचा है। किसी भी विदेशी भाषा में उपलब्ध ज्ञान को हम हिंदी में ग्रहण करने में सक्षम हो रहे है। कृत्रिम बुद्धिमता ने भाषायी अन्तराल को दूर कर हिंदी को अधिक व्यापक एव सक्षम बनाया है और खुले दृष्टिकोण के साथ तकनीक के साथ तालमेल बैठाकर चलने से हमारी भाषा और अधिक समृद्ध और लोकप्रिय होगी। इधर बात है कि हिंदी भाषा और कृत्रिम बुद्धिमता के बीच क्या संबंध हो सकता है? यह हमारे लिए एक पहेली के समान है।

आज कृत्रिम बुद्धिमता जीवन के हर पहलू को प्रभावित कर रही है और ऐसा माना जा रहा है कि अगले एकाध दशक में कृत्रिम बुद्धिमता के बदौलत हमारी दुनिया का कायाकल्प होने वाला है। हिंदी सहित हमारी भाषाएं भी इस बदलाव से अछूती नहीं रहने वाली है और न ही उन्हें इससे अप्रभावित रहना चाहिए। जो भाषाएं बदलते युग के साथ तालमेल बिठाकर नहीं चल पाती है उनके स्थायी अस्तित्व की गारंटी नहीं ली जा सकती है। वैसे ही, जैसे अपने दौर के विकास, बदलाव, नवाचार आदि से अछूते रह जाने वाले समाज न सिर्फ प्रगति की दौड़ में पिछड़ जाते है बल्कि धीरे-धीरे अपनी प्रासगिकता खो बैठते है। अफगानिस्तान, इराक, सीरिया, उत्तर कोरिया और पाकिस्तान जैसे देशों के उदाहरण आपके सामने है। विज्ञान, प्रौद्योगिकी, बाजार और बदलाव एक वास्तविकता है। उनका प्रतिरोध करने में कोई लाभ नहीं। हा, उनके साथ आने में हम सबका लाभ है, हमारी भाषाओं का भी।

कृत्रिम बुद्धिमता की अथाह शक्ति के अनगिनत उदाहरण हमारे सामने है। इस शक्ति के बारे में सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह की चर्चाएं है। एक तबके को लगता है कि यह मानव सभ्यता के भविष्य के लिए संकट खड़ा कर देगी इसलिए इससे बचना श्रेयस्कर है। दूसरे, तबके को लगता है कि यह हमारी तरक्की के ऐसे नए रास्ते खोलने वाली है जिनकी अब तक हमने कल्पना भी नही की, इसलिए इसका अधिकतम दोहन किया जाना चाहिए। मुझे लगता है कि सही रास्ता दोनों के बीच से आता

है। कृत्रिम बुद्धिमता को तय सीमाओं के भीतर, जिम्मेदारी के साथ इस्तेमाल किया जाए तो वह मानव सभ्यता की प्रगति का सबसे शक्तिशाली माध्यम बन सकती है।

यह प्रश्न स्वाभाविक रूप से उठता है कि हिंदी भाषा के लिए कृत्रिम बुद्धिमता की क्या प्रासंगिकता है और वह इस भाषा के भविष्य को किस तरह प्रभावित कर सकती है? इसका उत्तर समझने के लिए हमें हिंदी की वर्तमान चुनौतियों, अवसरों तथा कृत्रिम बुद्धिमता में निहित शक्तियों पर विचार करने की आवश्यकता है। कृत्रिम बुद्धिमता का अर्थ तकनीक की उस शक्ति से है जिसका प्रयोग करते हुए वह इंसानों की ही तरह सीख सकती है, विशाल स्तर पर आंकडों का विश्लेषण कर सकती है, चीजों पर निगरानी कर सकती है, भिन्न-भिन्न परिस्थितियों का मंथन कर सकती है, अपनी क्षमताओं में वृद्धि कर सकती है, निर्णय ले सकती है और परिणाम दे सकती है। यह सामान्य प्रौद्योगिकी से अलग है जो पहले से निर्धारित काम करती है, अपनी सीमाओं में रहती है और पहले से दिए गए निर्देशों के आधार पर परिणाम देती है। वह स्वयं को बदलती नहीं है और स्वयं को निरंतर बेहतर बनाने में सक्षम नहीं है।

कृत्रिम बुद्धिमता हिंदी के स्थायी भविष्य को सुनिश्चित कर सकती है। यूनेस्को ने अपनी एक रिपोर्ट में कहा था कि दुनिया की 7200 भाषाओं में से लगभग आधी इस शताब्दी के अंत तक विलुप्त हो जाएगी। अगर हम हिंदी को विलुप्त होने वाली इन भाषाओं की सूची में नही देखना चाहते है तो हमें कृत्रिम मेधा को खुले दिल से अपनाना चाहिए। वजह यह कि यह प्रौद्योगिकी भाषाओं में बीच दूरियां समाप्त करने में सक्षम है। आज हम अंग्रेजी की प्रधानता से त्रस्त है और कृत्रिम मेधा तथा दूसरी आधुनिक प्रौद्योगिकियां अंग्रेजी के दबदबे से मुक्त होने में हमारी मदद कर सकती है।

जिस अविश्वसनीय और चमत्कारिक अंदाज में कृत्रिम बुद्धिमता चीजों को बदल रही है, उसे देखते हुए अगले एक-दो दशकों में हम भाषा-निरपेक्ष विश्व की ओर बढ़ सकते है। ऐसा विश्व जिसमें हिन्दी जैसी भाषाएं बोलने-लिखने वाला व्यक्ति अवसरों से वंचित न हो क्योंकि प्रौद्योगिकी एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद को इतना सटीक, सहज, सरल तथा सार्वत्रिक बना सकती है कि आप अंग्रेजी की सामग्री को हिंदी में पढ़ सकेंगे और हिंदी की सामग्री को अंग्रेजी में।

कृत्रिम बुद्धिमता का दूसरा बड़ा प्रभाव होगा अन्य प्रमुख भाषाओं के साथ हिंदी के गहरे संबंधों का विकसित होना। प्रेमचंद, रवींद्रनाथ ठाकुर, सुब्रमण्य भारती, रामधारी सिंह दिनकर, जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, महादेवी वर्मा के साहित्य से लेकर रामायण, महाभारत, श्रीमद्भग्वगीता, वेद, पुराण, उपनिषद् जैसे ग्रंथ, आयुर्वेद-योग जैसी ज्ञान संपदा, हमारी पत्रकारिता और विश्वविधालयों के शोध आदि दुनिया भर में गैर-हिंदी पाठकों तक पहुंच सकते है। यह हमारी साहित्यिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक तथा शैक्षणिक संपदा को वैश्विक पहचान दिलाने में योगदान देगा। इतना ही, बल्कि इससे कहीं अधिक आवश्यक है विश्व के ज्ञान, शोध, साहित्य का हिंदी भाषी लोगों तक पहुंचना। हिंदी में विज्ञान, तकनीक, चिकित्सा, अर्थव्यवस्था आदि विषयों पर विश्व-स्तरीय की कमी है।

हिंदी में शिक्षण सामग्री तैयार करना आसान तथा तेज हो जाएगा। आज केंद्र सरकार तथा कुछ राज्य सरकारों के निर्देश पर हिंदी में पाठ्य सामग्री तैयार करने के लिए कृत्रिम बुद्धिमता का प्रयोग होने लगा है। यह प्रक्रिया निरंतर सटीक और तीव्र होती चली जाएगी। अंग्रेजी-फ्रेंच या जर्मन की किताबों को स्कैन करके चंद मिनटों में सीधे हिंदी के अनुवाद करना संभव हो गया है। कल्पना कीजिए की हम हिंदी में

जिन विषयों में अच्छी सामग्री की कमी से परेशान रहे है, उन विषयों में अचानक ही दर्जनों या सैंकडों पुस्तकें उपलब्ध हो जाएं। हिंदी में पारंपरिक ज्ञान का दस्तावेजीकरण आसान हो जाएगा। हिंदी भाषी लोग वैश्विक संस्थानों में पढ़ सकेंगे, भाषाओं की सीमाओं से मुक्त रहते हुए कौशल प्राप्त कर सकेंगे और विश्व को अपनी सेवाएं दे सकेंगे।

वर्तमान समय कृत्रिम बुद्धिमता का समय है। विकास को गति देने और लोगों को बेहतर सुख-सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए प्रत्येक क्षेत्र में अत्याधुनिक तकनीक का भरपूर उपयोग किया गया है। कृत्रिम बुद्धिमता भी ऐसी ही अत्याधुनिक तकनीक है जिसका उपयोग आज शिक्षा, स्वास्थ्य, वाणिज्य, मनोरंजन, परिवहन आदि अनेक क्षेत्रों में हो रहा है। कृत्रिम बुद्धिमता प्रौद्योगिकी विज्ञान की एक ऐसी शाखा है जिसके अन्तर्गत मशीनें ही इस प्रकार से व्यवहार करती है जिस प्रकार से मानव अपनी बुद्धिमता का उपयोग करता है। इसका अर्थ है कि मशीनें जब समय और परिस्थिति इत्यादि के विश्लेषण के बाद कोई निर्णय लेती है, तो मशीन की इस अवस्था को कृत्रिम बुद्धिमता कहा जाता है। कृत्रिम बुद्धिमता विज्ञान का सब-डिवीजन है और इसकी जडे पूरी तरह से कम्प्यूटिंग सिस्टम पर आधारित है। इसका अंतिम लक्ष्य ऐसे उपकरणों का निर्माण करता है जो बुद्धिमानी से और स्वतंत्र रूप से कार्य कर सके और मानव श्रम को कम कर सके।

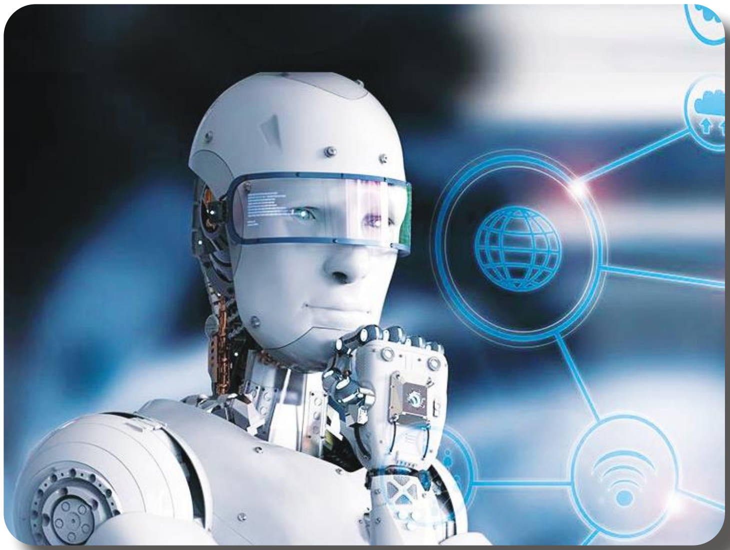

हिंदी भाषा, साहित्य की भाषा होने के साथ-साथ, आधुनिक ज्ञान, विज्ञान को अंगीकार करके अग्रसर होने में सक्षम भाषा है। कृत्रिम बुद्धिमता ज्ञान की एक नई विधा है और भारत इसमें बहुत प्रगति कर चुका है, और कर रहा है। इस प्रगति में हिंदी साथ चल रही है। हिन्दी में कृत्रिम बुद्धिमता के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य घटित हो रहा है। ध्वनि प्रसंस्करण की बदौलत वाक् से पाठ और पाठ से वाक् प्रौद्योगिकी उपलब्ध हो गई है। कंप्यूटर विजन के कारण हिंदी के दस्तावेजों को स्कैन करके उनके पाठ को कंप्यूटर में टाइप किए गए पाठ के रूप में सहेजना संभव हो गया है। डेढ़ सौ से अधिक वैश्विक भाषाओं और बीस से अधिक भारतीय भाषाओं के साथ हिन्दी के पाठ को दो तरफा अनुवाद संभव है। अलेक्सा, कोर्टाना, सिरी और गूगल असिस्टेंट जैसे डिजिटल सहायकों के साथ या तो हिंदी में संवाद करना संभव है या इंटरनेट सर्च तथा अनुवाद आदि के लिए उनकी मदद ली जा सकती है। माइक्रोसॉफ्ट और गूगल जैसी कंपनियों की एपीआई का प्रयोग करके हिंदी में कृत्रिम बुद्धिमता से युक्त एप्लीकेशन बनाना संभव हो गया है।

इक्कीसवीं सदी के इस निर्णायक दौर में, जब प्रौद्योगिकी की लहर क्षेत्र को छू रही है, कृत्रिम बुद्धिमता एक ऐसी शक्ति बनकर उभरी है जो मानव जीवन की दिशा और दशा दोनों को बदल रही है। यह महज एक तकनीकी अवधारणा नहीं, बल्कि एक ऐसा दर्पण है जिसमें हम अपनी क्षमताओं और संकल्पनाओं को देख सकते है। इसी संदर्भ में, भारत की सबसे व्यापक और समृद्ध भाषाओं में से एक, हिंदी और कृत्रिम बुद्धिमता का संगम एक अभूतपूर्व क्रांति का सूचक है। यह निबंध हिंदी भाषा और कृत्रिम बुद्धिमता के बीच के गहरे संबंध, उनके आपसी तालमेल से उत्पन्न होने वाली चुनौतियों और अवसरों, और इस दिशा में उठाए जा रहे महत्वपूर्ण कदमों पर विस्तृत चर्चा करेगा। यह विश्लेषण करेगा की कैसे एआई जो अब तक मुख्य रूप से अंग्रेजी जैसी वैश्विक भाषाओं पर केंद्रित था, हिंदी के विशाल और विविध भाषी समुदाय के लिए समावेश और सशक्तिकरण का एक शक्तिशाली माध्यम बन सकता है।

हिंदी सिर्फ एक भाषा नहीं, बल्कि भारत की सांस्कृतिक पहचान, इतिहास और करोड़ों लोगों की अभिव्यक्ति का माध्यम है। यह दुनिया की तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है, जिसके वक्ताओं की संख्या 600 मिलियन से अधिक है। वहीं, कृत्रिम बुद्धिमता ने डेटा विश्लेषण, स्वचालन और मानव-मशीन संवाद के तरीकों को क्रांतिकारी बना दिया है। जब ये दोनों शक्तियां मिलती है, तो नवाचार की असीम संभावनाएं खुलती है। यह संगम न केवल तकनीकी प्रगति का मार्ग प्रशस्त करता है, बल्कि यह भी सुनिश्चित करता है कि डिजिटल क्रांति का लाभ समाज के हर वर्ग तक पहुंचे। यह निबंध इन दोनों क्षेत्रों के तालमेल को गहराई से परखते हुए, भविष्य की चुनौतियों और अवसरों पर प्रकाश डालेगा, और यह स्थापित करेगा कि हिंदी और एआई का सह-अस्तित्व एक समृद्ध, समावेशी और तकनीकी रूप से उन्नत भारत के निर्माण के लिए क्यों आवश्यक है। हिंदी भारत की राष्ट्रीय पहचान का एक अभिन्न अंग है और देश के अधिकांश हिस्सों में इसे समझा और बोला जाता है। संवैधानिक रूप से, यह भारत की दो आधिकारिक भाषाओं में से एक है। इसकी देवनागिरी लिपि वैज्ञानिक और सुव्यवस्थित है, और इसका व्याकरण संस्कृत की समृद्ध विरासत को वहन करता है। हिंदी की साहित्यिक और सांस्कृतिक विरासत अत्यंत विशाल है, जिसमें कविता, कहानी, उपन्यास और लोकगीतों का एक समृद्ध भंडार है। यह भाषा न केवल संचार का माध्यम है, बल्कि यह भारतीय उपमहाद्वीप की सांस्कृतिक चेतना का भी प्रतीक है।

डिजिटल युग में, हिंदी की स्थिति जटिल रही है। एक ओर, इंटरनेट और स्मार्टफोन के प्रसार ने हिंदी भाषा आबादी को पहली बार बड़े पैमाने पर ऑनलाइन लाया है। यह एक ऐसा अगला अरब उपयोगकर्ता वर्ग है जो मुख्य रूप से अपनी स्थानीय भाषा में सामग्री और सेवाओं की तलाश करता है। दूसरी ओर, डिजिटल बुनियादी ढांचा और तकनीकी नवाचार अभी भी बड़े पैमाने पर अंग्रेजी केंद्रित है। अधिकांश प्रोग्रामिंग भाषाएं, डेटासेट, और उन्नत एआई मॉडल अंग्रेजी में विकसित किए गए है। नतीजतन, हिंदी भाषी उपयोगकर्ताओं को अक्सर अंग्रेजी में उपलब्ध सुविधाओं और सेवाओं का लाभ उठाने के लिए संघर्ष करना पड़ता है।

यह एक महत्वपूर्ण चुनौती है। यदि हम डिजिटल खाई को पाटना चाहते है, तो यह आवश्यक है कि हिंदी को डिजिटल पारिस्थितिक तंत्र के केंद्र में लाया जाए। इसका अर्थ है कि हिंदी में उच्च-गुणवता वाली सामग्री, उपयोगकर्ता अनुकूल इंटरफेस, और सबसे महत्वपूर्ण, उन्नत भाषाई प्रसंस्करण क्षमताओं का विकास करना होगा। यह वह जगह है जहां कृत्रिम बुद्धिमता एक गेम चेंजर के रूप में उभरती है। कृत्रिम बुद्धिमता के माध्यम से, हम न केवल हिंदी के लिए मौजूदा प्रौद्योगिकियों का अनुकूलन कर सकते है, बल्कि नई और अनूठी सेवाएं भी बना सकते है जो हिंदी के भाषाई और सांस्कृतिक बारीकियों को समझ सकें।

कृत्रिम बुद्धिमता की मूल बाते और भाषाई अनुप्रयोग : कृत्रिम बुद्धिमता कंप्यूटर विज्ञान का एक क्षेत्र है जो ऐसी मशीनें बनाने पर केंद्रित है जो मानव जैसी बुद्धिमता का अनुकरण कर सकें। कृत्रिम बुद्धिमता के तहत, मशीनें डेटा से सीख सकती है, तर्क कर सकती है, समस्याओं को हल कर सकती है और निर्णय ले सकती है। कृत्रिम बुद्धिमता का एक महत्वपूर्ण उप-क्षेत्र प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण है, जो कंप्यूटर को मानव भाषा को समझने, व्याख्या करने और उत्पन्न करने

में सक्षम बनाता है। इन सभी अनुप्रयोगों के लिए विशाल मात्रा में भाषाई डेटा की आवश्यकता होती है, जिसे मशीनी शिक्षण मॉडल को प्रशिक्षित करने के लिए उपयोग किया जाता है। अंग्रेजी जैसी भाषाओं के लिए, इंटरनेट पर डेटा की भरमार है, जिससे कृत्रिम मेधा को प्रशिक्षित करना आसान होता है। हालाकि, हिंदी के लिए, यह एक बड़ी चुनौती रही है। हिंदी में उच्च गुणवता वाले, वर्गीकृत डेटासेट की कमी ने एनएलपी के विकास को धीमा कर दिया है। इसके अलावा, हिंदी की जटिल व्याकरणिक संरचना, लिंग भेद और क्षेत्रीय बोलियों की विविधता कृत्रिम मेधा के लिए एक जटिल पहेली प्रस्तुत करती है।

हिंदी और कृत्रिम बुद्धिमता का संगम न केवल तकनीकी प्रगति का एक अवसर है, बल्कि यह कुछ महत्वपूर्ण चुनौतियों को भी सामने लाता है, जिनका समाधान किए बिना हम इस क्षेत्र में पूर्ण क्षमता को प्राप्त नहीं कर सकते।

- **डेटा की कमी -** जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, हिंदी में विशाल, विविध और लेबल किए गए डेटासेट की कमी है। कृत्रिम बुद्धिमता डेटा से सीखते है, और यदि डेटा अपर्याप्त या पक्षपाती है, तो मॉडल की सटीकता और निष्पक्षता प्रभावित होती है। हिंदी में सही उच्चारण, बोलियों और सांस्कृतिक संदर्भों को दर्शाने वाले डेटा की आवश्यकता है।
- **व्याकरणिक जटिलता -** हिंदी का व्याकरण अंग्रेजी की तुलना में अधिक जटिल है, जिसमें लिंग, वचन, कारक और काल के अनुसार क्रिया और विशेषण के रूप में बदलते है। कृत्रिम बुद्धिमता को इन सभी बारीकियों को समझने के लिए विशेष रूप से डिजाइन करने की आवश्यकता होती है।
- **तकनीकी बुनियादी ढांचा -** अधिकांश कृत्रिम बुद्धिमता विकास उपकरण और फ्रेमवर्क अंग्रेजी भाषा के लिए अनुकूलित है। हिंदी के लिए विशेष उपकरण और पुस्तकालयों का अभाव है, जिससे विकास की प्रक्रिया धीमी हो जाती है।
- **विशाल उपयोगकर्ता आधार -** भारत में करोडो लोग हिंदी बोलते है, जो कृत्रिम बुद्धिमता संचालित उत्पादों और सेवाओं के लिए एक विशाल बाजार प्रस्तुत करता है। हिंदी में उपलब्ध सेवाएं डिजिटल पहुंच को बढ़ा सकती है और ग्रामीण तथा शहरी गैर-अंग्रेजी भाषी आबादी को सशक्त कर सकती है।
- **समावेश और सशक्तिकरण -** कृत्रिम बुद्धिमता हिंदी के माध्यम से शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा, कृषि और वित्तीय सेवाओं को करोड़ों लोगों तक पहुंचा सकता है। एक किसान अपने फोन पर हिंदी में मौसम की जानकारी या फसल की सलाह प्राप्त कर सकता है, और एक छात्र ऑनलाइन कक्षाओं में अपनी मातृभाषा में भाग ले सकता है।
- **सांस्कृतिक संरक्षण -** कृत्रिम बुद्धिमता पुरानी हिंदी पांडुलिपियों, लोक साहित्य और ऐतिहासिक दस्तावेजों का डिजिटलीकरण, विश्लेषण और संरक्षण कर सकता है। यह हिंदी की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को भविष्य की पीढ़ियों के लिए सुलभ बना सकता है।
- **नवाचार और नए उत्पाद -** हिंदी के लिए विशेष कृत्रिम मेधा समाधान, जैसे हिंदी-विशिष्ट वर्चुअल सहायक, अनुवाद उपकरण, और सामग्री निर्माण प्लेटफॉर्म, नए व्यवसायो और नवाचारों को जन्म दे सकता है।
- **बहुभाषी भारत को जोड़ना -** कृत्रिम मेधा भारत की विभिन्न भाषाओं को आपस में जोड़ने में मदद कर सकता है। एक मजबूत हिंदी कृत्रिम मेधा मॉडल अन्य भारतीय भाषाओं के लिए भी मॉडल विकसित करने के लिए एक आधार प्रदान कर सकता है।

नवाचार की दिशा में उठाए गए कदम

हिंदी भाषा और कृत्रिम बुद्धिमता के संगम को साकार करने के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठाए जा रहे है। ये प्रयास सरकारी एजेंसियों, अनुसंधान संस्थानों, निजी कंपनियों और स्टार्टअप्स द्वारा संचालित है :-

- **राष्ट्रीय भाषा अनुवाद मिशन -** भारत सरकार ने यह मिशन शुरू किया है जिसका उद्देश्य सरकारी दस्तावेजों, कानूनी ग्रंथों और वैज्ञानिक साहित्य को डिजिटल रूप से भारतीय भाषाओं में अनुवाद करना है।

- **भाषिनी -** यह भारत सरकार द्वारा समर्थित एक पहल है जिसका उद्देश्य भारतीय भाषाओं के लिए एक खुले पारिस्थितिक तंत्र का निर्माण करना है। यह सार्वजनिक डोमेन में भाषा डेटासेट और कृत्रिम मॉडल उपलब्ध कराता है, जिससे डेवलपर्स और शोधकर्ताओं के लिए हिंदी में काम करना आसान हो जाता है।
- **गूगल और माइक्रोसॉफ्ट -** इन वैश्विक तकनीकी दिग्गजों ने हिंदी में कृत्रिम संचालित उत्पादों को पेश करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। गूगल असिस्टेंट अब हिंदी में समझ और प्रतिक्रिया दे सकता है, और गूगल ट्रासलेट हिंदी से और हिंदी में अनुवाद में बहुत सुधार हुआ है।
- **अमेजन -** अमेजन अलेक्सा अब हिंदी में आदेशों को समझ सकता है, जो स्मार्ट होम उपकरणों के उपयोग को हिंदी भाषी घरों में बढ़ावा दे रहा है।
- **भारतीय स्टार्टअप -** कई स्टार्टअप हिंदी में एआई संचालित समाधान विकसित कर रहे है। उदाहरण के लिए, कुछ स्टार्टअप हिंदी में ग्राहक सेवा के लिए चैटबॉट और वॉयस बॉट बना रहे है, जबकि अन्य हिंदी में शैक्षिक सामग्री और स्वास्थ्य सलाह प्रदान करने वाले ऐप्स पर काम कर रहे है।
- इन संस्थानों द्वारा विकसित किए गए मॉडल और उपकरण अक्सर ओपन सोर्स होते है, जो पूरे समुदाय को लाभ पहुंचाते है।

अतः इस निबंध से यही निष्कर्ष निकलता है कि हिंदी भाषा और कृत्रिम बुद्धिमता का संगम एक ऐसा परिवर्तनकारी कदम है जो न केवल तकनीकी प्रगति को गति देगा बल्कि भारत के सामाजिक और आर्थिक विकास को भी नई दिशा देगा। यह एक ऐसा मार्ग है जो भाषा को केवल संचार के माध्यम तक सीमित नहीं रखता, बल्कि उसे नवाचार, सशक्तिकरण और समावेश के एक शक्तिशाली उपकरण में बदल देता है।

अंत में, हिंदी और एआई का यह विशाल संयोग नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक और सामाजिक अनिवार्यता है। यह एक ऐसी यात्रा है जो हमें एक ऐसे भविष्य की ओर ले जाएगी जहां भाषा और प्रौद्योगिकी के बीच की दीवारें गिर जाएगी, और हर भारतीय चाहे वह कहीं भी हो अपनी भाषा में डिजिटल दुनिया के असीम अवसरों का लाभ उठा सकेगा। यह नवाचार की दिशा में उठाया गया एक ऐसा कदम है जो एक समृद्ध, समावेशी और तकनीकी रूप से उन्नत भारत के निर्माण के लिए आधारशिला रहेगा।

मंझधार

बूढ़े पत्ते का क्या ठिकना,
किस्मत है – सुखाना, झड़ जाना
नदी किनारे एक अनजान पंछी ने
पूछा, क्या तेरा पैमाना ?
एक टक देखकर बोला,
हवा के झोको में
है, बाहों को फैलाना,
असमंजस में ताक कर वो
लगी चुगने दाना पानी तो,
मंद हवा ने रुख कब बदला
रेत की आंधी से अदला ।
फड़फड़ाके निचले डाल पर
बैठी जो वो प्राण बचा कर,
झकोरे ने मारा टक्कर
सम्भल पाना, था एक चक्कर ।
नजर पड़ी जो दूर अंधियारा
मिश्रित बौछारे थी क्षितिज पर,
दिख पड़ा वो बूढ़ा पत्ता
बांह फैलाए नदी के उपर
गोते खाकर, मुस्कराकर,
हाथ हिलाया अलविदा कहकर
सामने था उल्लास और रोमांच का बवंडर,
आज था वो मंझधार के अंदर ।

धुर्जती प्रसाद दत्ता
प्रबंधक (सूचान प्रौद्योगिकी)
मंडल कार्यालय दुर्गापुर

भरोसा परंपरा का, तकनीक भविष्य की: पीएनबी का डिजिटल बैंकिंग में योगदान

विशाल देबबर्मा
विपण अधिकारी
मंडल कार्यालय मुर्शिदाबाद

कहते हैं कि वक्त के साथ बदल जाना ही समझदारी है, लेकिन अपनी जड़ों को थामे रखते हुए आधुनिकता को अपनाना एक मिसाल है । भारत के बैंकिंग इतिहास में 'पंजाब नैशनल बैंक' (PNB) एक ऐसा ही नाम है । जो 1894 में एक स्वदेशी आंदोलन से शुरू हुआ यह सफर आज डिजिटल क्रांति के उस मुकाम पर पहुँच चुका है, जहाँ बैंक अब केवल ईंट-पत्थर की इमारतों में नहीं, बल्कि हर भारतीय की हथेली में बसता है ।

1. PNB One: सुविधा और संवेदना का संगम

डिजिटल बैंकिंग का ज़िक्र होते ही सबसे पहले दिमाग में ऐप्स की भीड़ आती है, लेकिन PNB One ने इस भीड़ में अपनी एक अलग जगह बनाई है । यह ऐप केवल कोडिंग और एल्गोरिदम का मेल नहीं है, बल्कि एक आम आदमी की ज़रूरतों का जवाब है ।

• एक स्पर्श पर समाधान: चाहे वह आधी रात को फंड ट्रांसफर करना हो या घर बैठे सुकन्या समृद्धि खाते में पैसे जमा करना, पीएनबी वन ने बैंकिंग को 'लाइन' से निकालकर 'ऑनलाइन' कर दिया है ।

• सहजता: इसका डिज़ाइन इतना सरल है कि एक युवा छात्र से लेकर पेंशन पाने वाले बुजुर्ग तक, हर कोई इसे आसानी से इस्तेमाल कर पा रहा है ।

2.'डिजिटल इंडिया' को गाँव की चौपाल तक पहुँचाना

अक्सर तकनीक को शहरों की जागीर समझा जाता है, लेकिन पीएनबी ने इस धारणा को तोड़ा है । बैंक ने डिजिटल बैंकिंग को केवल कॉर्पोरेट ऑफिसों तक सीमित नहीं रखा, बल्कि इसे देश के दूर-दराज के गाँवों तक पहुँचाया है ।

• वित्तीय समावेशन: जन धन खातों और रूपे कार्ड के जरिए पीएनबी ने उस किसान को भी डिजिटल भुगतान की ताकत दी है, जो कभी बैंक जाने के नाम से कतराता था ।

• बैंकिंग कॉरस्पोंडेंट (BC): बैंक के डिजिटल मित्रों ने तकनीक और इंसान के बीच के पुल का काम किया है, जिससे आज एक ग्रामीण वृद्ध महिला अपने अंगूठे के निशान (AePS) से अपनी पेंशन निकाल पा रही है ।

3. तकनीक में मानवीय बुद्धिमत्ता: AI और WhatsApp

पीएनबी ने 'PIHU' (वर्चुअल असिस्टेंट) और WhatsApp Banking जैसी सुविधाएँ देकर यह साबित किया है कि डिजिटल बैंकिंग बोझिल नहीं, बल्कि संवादपरक हो सकती है । आज जब आप व्हाट्सएप पर अपनी शेष राशि चेक करते हैं, तो वह अनुभव वैसा ही होता है जैसे किसी बैंक मित्र से बात करना। यह तकनीक और मानवीय संवेदना का अद्भुत उदाहरण है ।

4. सुरक्षा: विश्वास की सबसे बड़ी डोर

डिजिटल दुनिया में 'भरोसा' सबसे महंगी चीज़ है। पीएनबी ने अपने ग्राहकों को केवल ऐप नहीं दिया, बल्कि एक सुरक्षित कवच भी दिया है । साइबर सुरक्षा को लेकर बैंक की जागरूकता मुहिम और 'सेफ डिजिटल बैंकिंग' के प्रयासों ने ग्राहकों के मन में यह विश्वास पैदा किया है कि उनका पसीना-पूनजी का पैसा पूरी तरह सुरक्षित है ।

4. एमएसएमई (MSME): छोटे सपनों को बड़ी उड़ान

देश के छोटे व्यापारियों और उद्यमियों के लिए पीएनबी की डिजिटल लोन प्रक्रिया किसी वरदान से कम नहीं है । बिना किसी कागज़ी उलझन के, डेटा के आधार पर तुरंत लोन स्वीकृत होना, बदलते भारत की नई तस्वीर है ।

पंजाब नैशनल बैंक का डिजिटल बैंकिंग में योगदान महज़ आँकड़ों की बाज़ीगरी नहीं है । यह कहानी है एक बुजुर्ग के सुकून की, एक युवा उद्यमी के जोश की और एक ग्रामीण महिला के स्वावलंबन की । पीएनबी ने यह दिखा दिया है कि डिजिटल होने का मतलब केवल मशीन होना नहीं है, बल्कि तकनीक के माध्यम से मानवीय जीवन को और अधिक सरल और खुशहाल बनाना है।

"पुराना भरोसा, नई तकनीक" - यही पीएनबी की डिजिटल यात्रा का मूल मंत्र है ।

आतंक ही है

वो बहुत छोटा था
जब उसकी माँ
उसे अच्छी आयतें पढ़ाती थी...
बड़ी तबीयत से
उसकी बूढ़ी माँ ने
उसे ज़माने की तहज़ीब सिखायी
और सिखाया था
ज़मीन पर पड़ी फ़ालतू चीज़ों से
एक मुक़म्मल ख़ाका खींचना
जिसके संभावित वजूद का
उसे ख़ुद में
कभी कोई इल्म न हुआ.
उसके ख़यालों से
उठनेवाली हर शिकस्त को
उसकी उसी माँ ने
ख़ून में उसके
कुछ यूँ चस्पा कर रखा था
कि उसकी हर आह
दम तोड़ते- तोड़ते
यकायक ही भभक उठती थी.
वो अपनी माँ का
अकेला बचा अरमान था
और जिसकी मातमपुर्सी
उसे अपने स्याह सपने में भी
कभी मंज़ूर न हुई.
उसने अपनी अकेली जूझती माँ को
कभी अकेले न होने का/ इसलिए भी
भान नहीं होने दिया
कि वो ज़माने से छीनकर
हर वाज़िब ख़ुशी को
अपनी माँ तक लाने की
बेपरवाह क़वायद में
ख़ुद को गोया समेटने निकला था।
उस निरीह माँ की
सिमटी हुई साँसों का भी
वो इकलौता जिम्मेवार बना रहा
और रही उफनती हुई

उसके अपने वजूद में
वही खुरदरी सी अकुलाहटें,
जिन्हें वो क्या
कोई माँ कहीं सींचती नहीं
और नहीं चाहती
अपनी कोख का
जीते- जी कोई हवन- सा करना.
ज़मीन से सपने चुनते हुए
वो अब बारूद की ढेर पर
अपने आप में
इक सुलगता सवाल हो गया है.
वो जान लेकर ही
ख़ून और उसके रिसते रहने का
चिरकालिक मर्म देखेगा
और जिसकी सुखभ्रांति में
वो अपनी माँ की
नाभि से अपरा के विच्छेद को
समझ जाने की
भयावह सीख जनेगा.
हाँ, यहीं आतंक है,
माँ के पेट से निकले
उस ख़ूबसूरत सच का,
जिसे कोई माँ
चीख- चीखकर भी
किसी आवेश में पैदा नहीं करती

अमिय प्रसून मल्लिक
वरिष्ठ प्रबंधक
मंडल कार्यालय नदिया

5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था और भारतीय बैंकिंग की भूमिका

अनुज साव
प्रबंधक
हरिंगहाता घाट शाखा

प्रस्तावना: एक संकल्प, एक लक्ष्य

भारत वर्तमान में विश्व की सबसे तेज़ी से उभरती प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में से एक है। भारत सरकार ने आने वाले वर्षों में देश को ५ ट्रिलियन डॉलर (५ लाख करोड़ डॉलर) की अर्थव्यवस्था बनाने का एक महत्वाकांक्षी लक्ष्य रखा है। यह केवल एक आर्थिक आँकड़ा नहीं है, बल्कि १३५ करोड़ से अधिक भारतीयों की आकांक्षाओं, समृद्धि और वैश्विक पटल पर भारत की सशक्त उपस्थिति का प्रतिबिंब है।

किसी भी राष्ट्र की प्रगति की गाड़ी उसके वित्तीय पहियों पर टिकी होती है, और भारत के संदर्भ में ये पहिए हमारा बैंकिंग क्षेत्र हैं। बैंक केवल धन जमा करने या ऋण देने की संस्थाएँ नहीं हैं, बल्कि वे आर्थिक विकास के इंजन हैं । ५ ट्रिलियन डॉलर के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए बैंकिंग क्षेत्र की सक्रियता, सुदृढ़ता और नवाचार की भूमिका अनिवार्य है।

आर्थिक विकास की धुरी: बैंकिंग क्षेत्र

अर्थव्यवस्था और बैंकिंग का संबंध अटूट है। जब हम ५ ट्रिलियन डॉलर की बात करते हैं, तो इसका अर्थ है उत्पादन में वृद्धि, सेवाओं का विस्तार और उपभोग में बढ़ोत्तरी । इन सभी गतिविधियों के लिए पूँजी की आवश्यकता होती है, जो बैंकों के माध्यम से ही संभव है।

१. साख सृजन और पूँजी निर्माण

बैंकिंग प्रणाली का प्राथमिक कार्य समाज की छोटी-छोटी बचतों को एकत्रित कर उन्हें उत्पादक क्षेत्रों में निवेश करना है । जब बैंक उद्योगों, कृषि और सेवा क्षेत्र को ऋण प्रदान करते हैं, तो इससे रोजगार के अवसर पैदा होते हैं और उत्पादन बढ़ता है । ५ ट्रिलियन डॉलर के लक्ष्य के लिए भारत को अपने सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) की तुलना में ऋण अनुपात को बढ़ाना होगा, जिसमें बैंकों का योगदान सर्वोपरि होगा।

२. वित्तीय समावेशन: जन-जन तक पहुँच

प्रधानमंत्री जन-धन योजना ने भारत में बैंकिंग की परिभाषा बदल दी है। करोड़ों नए खाते खुलने से समाज का अंतिम व्यक्ति भी मुख्यधारा की अर्थव्यवस्था से जुड़ गया है। जब गाँव का एक छोटा किसान या शहर का एक रेहड़ी-पटरी वाला बैंकिंग प्रणाली से जुड़ता है, तो उसकी बचत अर्थव्यवस्था का हिस्सा बनती है। यह 'बॉटम- अप' दृष्टिकोण ५ ट्रिलियन डॉलर की यात्रा को समावेशी बनाता है।

3. डिजिटल क्रांति और बैंकिंग का आधुनिक स्वरूप

पिछले एक दशक में भारतीय बैंकिंग ने अभूतपूर्व तकनीकी छलांग लगाई है। डिजिटल इंडिया अभियान ने बैंकों को ईंट-पत्थर की इमारतों से निकालकर मोबाइल फोन की स्क्रीन पर ला खड़ा किया है। यूपीआई (UPI) की सफलता: भारत आज डिजिटल भुगतान के मामले में विश्व का नेतृत्व कर रहा है। इसने नकदी पर निर्भरता कम की है और अर्थव्यवस्था को अधिक पारदर्शी बनाया है।

4. फिनटेक (Fintech) के साथ समन्वय:

पारंपरिक बैंकों और नई वित्तीय तकनीकी कंपनियों के मिलन से ऋण देना आसान और त्वरित हो गया है। बिना किसी कागजी कार्रवाई के ऋण उपलब्ध होना छोटे व्यापारियों के लिए वरदान साबित हो रहा है।

डिजिटल रुपया (CBDC): भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा पेश किया गया डिजिटल रुपया भविष्य की बैंकिंग की दिशा तय कर रहा है, जो लेन-देन की लागत को कम करेगा और सुरक्षा बढ़ाएगा।

क्षेत्रवार बैंकिंग की भूमिका

५ ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था का सपना विभिन्न क्षेत्रों के संतुलित विकास पर निर्भर है:

क. सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (MSME) क्षेत्र

यह क्षेत्र भारत की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। भारत के निर्यात और रोजगार में इसका बड़ा योगदान है। बैंकों द्वारा इस क्षेत्र को 'कोलेटरल - फ्री (बिना गारंटी) ऋण और रियायती दरों पर वित्तीय सहायता प्रदान करना इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए इंजन का काम करेगा।

ख. बुनियादी ढांचा और निर्माण

सड़कें, बंदरगाह, हवाई अड्डे और स्मार्ट सिटी बनाने के लिए भारी निवेश की आवश्यकता है। बैंकों द्वारा 'गति शक्ति' जैसी योजनाओं के तहत बुनियादी ढांचा परियोजनाओं को दीर्घकालिक वित्त पोषण प्रदान करना देश की उत्पादकता बढ़ाता है।

ग. कृषि और ग्रामीण विकास

भारत की आत्मा गाँवों में बसती है। किसान क्रेडिट कार्ड और प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र को ऋण (PSL) के माध्यम से बैंकों ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती दी है। कृषि तकनीक (Agri-tech) में निवेश के लिए बैंकों का सहयोग भारत को विश्व की 'फूड बास्केट' बनाने में मदद करेगा।

चुनौतियाँ और बैंकिंग सुधार

इस विशाल लक्ष्य की ओर बढ़ते हुए बैंकिंग क्षेत्र के सामने कुछ गंभीर चुनौतियाँ भी हैं, जिन्हें नजरअंदाज नहीं किया जा सकता:

गैर-निष्पादित परिसंपत्तियाँ (NPA): बैंकों के डूबे हुए कर्ज उनकी ऋण देने की क्षमता को प्रभावित करते हैं।

हालांकि 'इन्सॉल्वेंसी एंड बैंकरप्सी कोड' (IBC) जैसे सुधारों से स्थिति में सुधार हुआ है, लेकिन सतर्कता आवश्यक है।

साइबर सुरक्षा: जैसे-जैसे बैंकिंग डिजिटल हो रही है, साइबर धोखाधड़ी का खतरा बढ़ रहा है। ग्राहकों का भरोसा बनाए रखने के लिए बैंकों को सुरक्षा तंत्र पर भारी निवेश करना होगा ।

वैश्विक अस्थिरता : दुनिया भर में चल रहे भू-राजनीतिक तनाव और कच्चे तेल की कीमतों में उतार-चढ़ाव भारतीय बैंकों के लिए ब्याज दरों का संतुलन बिठाना चुनौतीपूर्ण बनाते हैं।

राजभाषा हिंदी और बैंकिंग का जन- जुड़ाव

एक दिलचस्प तथ्य यह है कि बैंकिंग में राजभाषा हिंदी का उपयोग भी ५ ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था में सहायक है। जब बैंक अपनी योजनाओं, ऋण प्रक्रियाओं और डिजिटल सेवाओं को हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं में उपलब्ध कराते हैं, तो आम आदमी का विश्वास बढ़ता है। भाषा की बाधा टूटने से बैंकिंग सेवाओं का प्रसार बढ़ता है, जो अंततः आर्थिक सक्रियता को बढ़ावा देता है।

निष्कर्ष: भविष्य की राह

५ ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था का मार्ग भारतीय बैंकिंग क्षेत्र की कार्यकुशलता और ईमानदारी से होकर गुजरता है। हमें ऐसे बैंकों की आवश्यकता है जो केवल लाभ के लिए न चलें, बल्कि राष्ट्र निर्माण के प्रति समर्पित हों ।

बैंकों को अपनी ऋण प्रक्रियाओं को और अधिक सरल, पारदर्शी और तकनीक आधारित बनाना होगा। साथ ही, वित्तीय साक्षरता को एक जनांदोलन का रूप देना होगा ताकि हर नागरिक निवेश और बचत के महत्व को समझ सके। यदि हमारे बैंक सशक्त होंगे, तो हमारा व्यापार सशक्त होगा, और यदि व्यापार सशक्त होगा, तो भारत को वैश्विक आर्थिक महाशक्ति बनने से कोई नहीं रोक सकता।

भारत का बैंकिंग क्षेत्र आज केवल देश के भीतर ही नहीं, बल्कि वैश्विक स्तर पर अपनी साख बना रहा है। आने

वाले समय में, यह क्षेत्र न केवल ५ ट्रिलियन डॉलर बल्कि १० ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था के लिए भी ठोस आधारशिला रखने की क्षमता रखता है।

"सशक्त बैंकिंग, समृद्ध भारत।"

निवेश योजना

कभी मायूसी कभी मुस्कान लाता,
शेयर बाजार यह खेल दिखाता ।
कभी ख्वाबों को पंख लगाए,
अगले ही पल सब छीन जाए ।।

सुबह-सुबह मोबाइल खोला,
ग्रीन दिखे तो दिल भी डोला।
लाल हुआ तो माथा ठनका,
फिर खाने में स्वाद न झलका ।।

पत्नी बोली “बचत कहां है ?”
मैं बोला- “मार्केट यहां है।”
बेटा पूछे- “पापा कब घुमने?”
मै बोला - “जब सेंसक्स झूमें”।

कदम समझदारी के जो बढ़ाए,
वही इस राह में जीत कमाए।
लालच जिसके मन में आया,
अक्सर उसने सब कुछ गवाया ।

‘लॉन्ग टर्म’ पर विश्वास जमाओ,
ज्ञान और समझादरी को अपनाओ ।।

सुमित साव
सहायक महाप्रबंधक
एमसीसी दुर्गापुर

मिशन डिजिटल इंडिया

गौरी शंकर मुर्मू
वरिष्ठ प्रबंधक
मंडल कार्यालय, मालदा

हमारा प्यारा देश भारतवर्ष, जिसकी कुल जनसंख्या है लगभग 140 करोड़ । अत्यंत सिंचित ह्रदय से मुझे यह बात कहना पर रहा है कि इतनी भारी आबादी वाले मेरे इस देश में भ्रष्टाचार केवल चारो दिशा में ही नहीं बल्कि दशो दिशाओं में फैला हुआ है । परन्तु यह बात भी सत्य है कि इसका जड़ से निवारण मुश्किल है, लेकिन असंभव नहीं है ।

"मैं एक ऐसे डिजिटल भारत का सपना देखता हूं जहां ज्ञान ताकत है - और लोगों को सशक्त बनाता है" - भारत के माननीय प्रधान मंत्री, श्री नरेंद्र मोदी ।

इस उद्देश्य को मुख्य रूप से ध्यान में रखते हुए और "पावर टू एम्पावर" का सपना दिल में लिए, हमारे माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने वर्ष 2015 में मिशन डिजिटल इंडिया नामक एक पहल शुरू की ।

1 जुलाई 2015 प्रत्येक भारतीय नागरिक के लिए जीवन बदल देने वाला एक दिन था; इस शुभ दिन पर हमारे आदरणीय प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी जी ने दिल्ली के इंदिरा गांधी आभ्यंतरिक क्रिरांगन में देश के प्रमुख व जाने माने उद्योगपतियों की उपस्थिति में मिशन डिजिटल इंडिया का उद्घाटन किया । उक्त कार्यक्रम में रिलायंस इंडिया लिमिटेड के अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक श्री. मुकेश अंबानी जी; टाटा समूह के अध्यक्ष (वर्त्तमान दिवंगत) साइरस मिस्त्री, विप्रो के अध्यक्ष श्री. अजीम प्रेमजी समेत कई अन्य औद्योगिक दिग्गज भी सामिल थे । उसी दिन डिजिटलीकरण और इंटरनेट के प्रचार व प्रसार के संबंध में विचारों के आदान-प्रदान के लिए एक सम्मेलन भी आयोजित किया गया था ।

यह अभियान देशवासी एवं सरकार दोनों के लिए ही स्वप्न परियोजना के रूप मे उभर कर आया है। इस अभियान को शुरू करने का भारत सरकार का मुख्य उद्देश्य कुछ इस प्रकार हैं:

- हर गांव में एक मजबूत और सुरक्षित डिजिटल बुनियादी ढांचा स्थापित कर, सुदूरतम स्थानों में भी इंटरनेट के उपयोग को बढ़ाकर देश को डिजिटल बनाना ।
- सरकारी पहलों और योजनाओं को डिजिटल रूप से उपलब्ध कराएं ताकि नागरिक बिना किसी बिचौलिए के इसके लिए आवेदन कर सकें तथा उसका लाभ उठा सके ।
- मिशन डिजिटल इंडिया अभियान का प्राथमिक लक्ष्य है हमारे देश व समाज को डिजिटल रूप से इतना सशक्त बनाना जिससे की सभी नागरिक बिना किसी भेदभाव और बाधाओं के सरकारी सेवाओं और योजनाओं के लाभ भौतिक या इलेक्ट्रॉनिक रूप से उठा सके ।
- विभिन्न क्षेत्रों में पारदर्शिता और जवाबदेही बढ़ेगा, इस प्रकार बिचौलिए की भूमिका समाप्त होगी, जिसके परिणामस्वरूप भ्रष्टाचार की मात्रा में घटौती तथा नौकरी के अवसर में बढोतरी होगी ।
- डिजिटल आधारित कार्य रीति को बढ़ावा ओर कागजी-

कार्यवाही आधारित नौकरियों में भारी बदलाव।

- हमारे देश में पैसे के लेनदेन का डिजिटलीकरण जिससे की काला बाजार और काले धन के लेनदेन को कम और धीरे-धीरे समाप्ती।
- आम जनता को डिजिटल रूप से साक्षर बनाना ।

विकास के 9 स्तंभ:

जब हम डिजिटल इंडिया अभियान के बारे में बात कर रहे हैं तो हमें निश्चित रूप से विकास के 9 स्तंभों के बारे में भी चर्चा करनी होगी। हमारे माननीय प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी के दृष्टिकोण और सपने पर बनाई गई डिजिटल इंडिया योजना का उद्देश्य था हमारे देश में विकास क्षेत्रों के 9 स्तंभों को महत्व देना और जरूरी सुधार करना। भारत की वृद्धि और विकास के ये 9 स्तंभ कुछ इस प्रकार हैं:

1. ब्रॉडबैंड राजमार्ग (Broadband Highways)
2. मोबाइल संयुक्तीकरण की सार्वभौमिक पहुंच (Universal Access to Mobile Connectivity)
3. सार्वजनिक इंटरनेट अभिगम कार्यक्रम (Public Internet Access Programme)
4. ई-गवर्नेंस: प्रौद्योगिकी के माध्यम से सरकार में सुधार (e-Governance: Reforming Government through Technology)
5. ई-क्रांति - सेवाओं की इलेक्ट्रॉनिक डिलीवरी (e-Kranti – Electronic Delivery of Services)
6. सभी के लिए सूचना (Information for All)
7. इलेक्ट्रॉनिक्स विनिर्माण (Electronics Manufacturing)
8. नौकरियों के लिए आईटी (IT for Jobs)
9. प्रारंभिक फसल कार्यक्रम (Early Harvest Programmes)

आइए अब आगे हम विकास के इन 9 स्तंभों के बारे में कुछ विस्तृत तथ्य जानते हैं।

1. ब्रॉडबैंड राजमार्ग (Broadband Highways)- इस स्तंभ का उद्देश्य ब्रॉडबैंड बुनियादी ढांचे और राष्ट्रीय ऑप्टिकल फाइबर नेटवर्क (एन ओ एफ एन) के विस्तार के माध्यम से दूरदराज और ग्रामीण क्षेत्रों सहित देश के सभी हिस्सों में हाई-स्पीड इंटरनेट संयुक्तीकरण प्रदान करना है।

2. मोबाइल संयुक्तीकरण की सार्वभौमिक पहुंच (Universal Access to Mobile Connectivity)- लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि प्रत्येक नागरिक के पास मोबाइल संयुक्तीकरण हो, मोबाइल फोन व इन्टरनेट के उपयोग को बढ़ावा देना और उसके जरिये डिजिटल सेवाओं के वितरण करना।

3. सार्वजनिक इंटरनेट अभिगम कार्यक्रम (Public Internet Access Programme)- यह स्तंभ ग्रामीण और दूरदराज के क्षेत्रों में इंटरनेट और डिजिटल सेवाएं प्रदान करने, डिजिटल पहुंच और साक्षरता बढ़ाने के लिए डिजिटल केंद्र स्थापित करने पर केंद्रित है।

4. ई-गवर्नेंस: प्रौद्योगिकी के माध्यम से सरकार में सुधार (e-Governance: Reforming Government through Technology)- इस स्तम्भ का मूल उद्देश्य नागरिकों को सरकारी सेवाएं इलेक्ट्रॉनिक रूप से उपलब्ध कराना, सार्वजनिक प्रशासन की दक्षता, पारदर्शिता और पहुंच में सुधार करना है।

5. ई-क्रांति - सेवाओं की इलेक्ट्रॉनिक डिलीवरी (e-Kranti – Electronic Delivery of Services)- नागरिकों के बीच डिजिटल साक्षरता और डिजिटल शिक्षा को बढ़ावा देना, उन्हें डिजिटल अर्थव्यवस्था और समाज में पूरी तरह से भाग लेने में सक्षम बनाना जिससे की नागरिक आवंटित इ-सेवाएं लेने में सक्षम हो पाए।

6. सभी के लिए सूचना (Information for All)- यह स्तंभ नागरिकों के लिए जानकारी आसानी से उपलब्ध कराने, पारदर्शिता सुनिश्चित करने और कागजी कार्रवाई को कम करने के लिए सरकारी दस्तावेजों और रिकॉर्ड के डिजिटलीकरण पर जोर देता है।

7. इलेक्ट्रॉनिक्स विनिर्माण (Electronics Manufacturing)- इलेक्ट्रॉनिक्स और हार्डवेयर के घरेलू विनिर्माण को प्रोत्साहित करना, जो आर्थिक विकास और

रोजगार सृजन का समर्थन करता है और बाहरी निर्भरता को कम करता है।

8. नौकरियों के लिए आईटी (IT for Jobs)- यह पहल युवाओं को प्रशिक्षण और कौशल विकास प्रदान करने, आईटी और डिजिटल क्षेत्रों में उनकी रोजगार क्षमता बढ़ाने पर केंद्रित है।

9. प्रारंभिक फसल कार्यक्रम (Early Harvest Programmes)- इन कार्यक्रमों में विशिष्ट परियोजनाएं शामिल हैं जो तत्काल डिजिटल जरूरतों को संबोधित करती हैं, जैसे स्कूल प्रमाणपत्रों तक ऑनलाइन पहुंच, डिजिटल उपस्थिति और सार्वजनिक स्थानों पर वाई-फाई।

हमने इतनी देर देश के विकाश के 9 स्तंभों के बारे में विस्तार से आलोचना की आब हम डिजिटल इंडिया अभियान ने देश के निवासियों के लिए विभिन्न सरकारी सेवाओं की पेशकश की है, उसके बारे में जानेंगे। भारत सरकार डिजिटल इंडिया परियोजना के तहत देशवासिओं को ढेर सारी सेवाएं प्रदान करती है, जिनमे से कुछ मुख्या सेवाओं के बारेमे हम अभी चर्चा करेंगे।

- **आधार (AADHAAR) -** बायोमेट्रिक पहचान प्रणाली जो निवासियों को अद्वितीय 12-अंकीय पहचान संख्या प्रदान करती है।
- **डिजिटल लॉकर-** महत्वपूर्ण दस्तावेज़ों को डिजिटल रूप से संग्रहीत करने और उन तक पहुंचने के लिए क्लाउड-आधारित प्लेटफ़ॉर्म।
- **BHIM यूपीआई-** स्मार्टफोन का उपयोग करके सुरक्षित पीयर-टू-पीयर (peer to peer) लेनदेन को सक्षम करने वाली डिजिटल भुगतान प्रणाली।
- **ई-साइन-** डिजिटल हस्ताक्षर का उपयोग करके दस्तावेजों पर ऑनलाइन हस्ताक्षर करना।
- **MyGov.in-** शासन और नीतिगत चर्चाओं में भागीदारी के लिए नागरिक सहभागिता मंच (वेबसाइट)।
- **ई-अस्पताल-** ऑनलाइन पंजीकरण और स्वास्थ्य सूचनाओं का संग्रहालय तथा उस तक पहुंच और साथ में डिजिटलीकृत अस्पताल सेवाएं ।
- **SWAYAM-** मुफ़्त ऑनलाइन पाठ्यक्रम और शिक्षण संसाधन प्रदान करता है ।
- **डिजिटल इंडिया पोर्टल-** सरकारी सेवाओं और सूचनाओं तक पहुँचने के लिए एक एकल-खिड़की मंच ।
- **उमंग (UMANG) ऐप-** विभिन्न सरकारी सेवाओं और सुविधाओं के लिए एकीकृत मोबाइल ऐप ।
- **स्मार्ट सिटी मिशन-** बेहतर बुनियादी ढांचे और डिजिटल सेवाओं के साथ स्मार्ट शहरों का विकास ।
- **राष्ट्रीय छात्रवृत्ति पोर्टल (National Scholarship Portal)-** छात्रवृत्ति का ऑनलाइन आवेदन एवं वितरण।
- **भारत नेट-** ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल सेवाओं के लिए गांवों को हाई-स्पीड ब्रॉडबैंड कनेक्टिविटी प्रदान करना।
- **मेक इन इंडिया-** भारत को सबसे पसंदीदा वैश्विक विनिर्माण गंतव्य के रूप में प्रचारित करना, कंपनियों को भारत में बने उत्पादों के विकास, निर्माण और संयोजन के लिए प्रोत्साहित करना और विनिर्माण में समर्पित निवेश को प्रोत्साहित करना।।
- **स्टार्टअप इंडिया-** प्रोत्साहन, बैंक ऋण और सलाह के माध्यम से स्टार्टअप का समर्थन करना और उद्यमिता को बढ़ावा देना।
- **स्टैंड अप इंडिया-** एस सी, एस टी और अन्य पिछड़ी जाति के साथ-साथ महिला उद्यमियों को प्रोत्साहन, बैंक ऋण और सलाह के माध्यम से उद्यमिता को बढ़ावा देना और स्टार्टअप का समर्थन करना।
- **ई-एन ए एम (e-NAM) -** उपज की कुशल बिक्री के लिए कृषि बाजारों को जोड़ने वाला ऑनलाइन ट्रेडिंग प्लेटफॉर्म।
- **डिजिटल साक्षरता-** प्रधानमंत्री ग्रामीण डिजिटल साक्षरता अभियान (PMGDisha) ने इस पहल को अंजाम दिया। इस विशाल परियोजना के तहत 2,351.38 करोड़ रुपये की लागत से सरकार लगभग 6 करोड़ परिवारों को डिजिटल रूप से साक्षर बनाने का प्रयास कर रही है।

- **भारतमाला-** इस योजना में 83,677 किमी (51,994 मील) सड़कों के निर्माण की परिकल्पना की गई है, जिसमें देश भर में 34,800 किमी (21,600 मील) अतिरिक्त राजमार्ग और सड़कें शामिल होंगे, जोकीं भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण द्वारा 48,877 किमी (30,371 मील) नए राजमार्ग बनाने की मौजूदा योजना के अलावा है। इसमें सुरंग, पुल, ऊंचे गलियारे, फ्लाईओवर, ओवरपास, इंटरचेंज, बाईपास, रिंग रोड आदि का विकास भी शामिल है।
- **सागरमाला-** इस परियोजना के संरचना भारत के 7500 किलोमीटर लंबी तटरेखा में बंदरगाह आधारित विकास को बढ़ावा देने के लिए किया गया है।
- **औद्योगिक गलियारे-** इसका उद्देश्य विदेशी और राष्ट्रीय उद्योगों को निवेश के लिए देश के विभिन्न हिस्सों में औद्योगिक गलियारे बनाना और अपने देश को शिल्प-समृद्ध बनाना है।
- **पीएम विश्वकर्मा-** डिजिटल इंडिया अभियान में नवीनतम अध्याय पीएम विश्वकर्मा योजना का शुभारंभ है जो लाखों पारंपरिक कारीगरों और शिल्पकारों को प्रोत्साहन, बैंक ऋण, वित्त पोषण और सलाह के माध्यम से बढ़ावा देकर लाभान्वित करना चाहता है।
- **ई-बस सेवाएं-** यह भी डिजिटल इंडिया अभियान के तहत की गई सबसे नवीनतम पहल में से एक है जिसके द्वारा शहरों के अंदर बेहतर और परेशानी मुक्त आवा-जाहि के लिए भारत भर के 169 शहरों में 10000 से अधिक ई-बसें तैनात की जाएंगी ।

डिजिटल इंडिया परियोजनाओं के तहत प्रदत्त सेवाओं के बारे में तोह हमने बात की आब हम डिजिटल इंडिया परियोजनाओं का देशवासीओं ने किस प्रकार से लाभ उठाया है इस बारे में चर्चा केर लेते है:

- **सेवाओं तक पहुंच:** डिजिटल इंडिया ने सरकारी सेवाओं तक पहुंच में उल्लेखनीय सुधार किया है, नौकरशाही बाधाओं को कम किया है और सेवाओं को अधिक पारदर्शी और कुशल बनाया है । नागरिक अब पासपोर्ट, लाइसेंस और प्रमाणपत्र के लिए आवेदन करने जैसी सेवाएं ऑनलाइन उपलब्ध केर सकते हैं जिसके लिए पहले लम्बी लम्बी श्रृंखला में खरे रहना पढता था। दूरदराज के क्षेत्रों में डिजिटल उपकरणों और इंटरनेट संयुक्तीकरण की उपलब्धता के साथ, किसान मौसम की स्थिति, बाजार की कीमतों और कृषि तकनीकों के बारे में वास्तविक समय की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, किसान सुविधा ऐप किसानों को मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करता है, जिससे वे फसल योजना और मूल्य निर्धारण के संबंध में सूचित निर्णय लेने में सक्षम होते हैं। यह डिजिटल सशक्तिकरण कृषि उत्पादकता को बढ़ाता है और ग्रामीण आबादी की आजीविका में सुधार करता है ।
- **वित्तीय समावेशन:** BHIM यूपीआई जैसी पहल ने डिजिटल भुगतान में क्रांति ला दी है। डिजिटल इंडिया ने देश भर में वित्तीय समावेशन को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। प्रधानमंत्री जन धन योजना (पीएमजेडीवाई) का उद्देश्य बैंक रहित आबादी को बैंकिंग सेवाएं प्रदान करना है । यह पहल लाखों लोगों को औपचारिक बैंकिंग प्रणाली में लाने में सफल रही है । उदाहरण के लिए, जन धन खाते डेबिट कार्ड, बीमा और ओवरड्राफ्ट सुविधाओं तक पहुंच प्रदान करते हैं। औपचारिक वित्तीय क्षेत्र में यह समावेशन न केवल सुरक्षित लेनदेन की सुविधा प्रदान करता है बल्कि आर्थिक विकास और गरीबी में कमी को भी बढ़ावा देता है । इस प्रकार वित्तीय समावेशन को बढ़ावा मिला है और नकदी पर निर्भरता कम हुई है ।
- **ई-गवर्नेंस:** डिजिटल इंडिया ने ई-गवर्नेंस प्रणालियों के कार्यान्वयन के माध्यम से शासन को बदल दिया है। ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म ने प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित किया है, भ्रष्टाचार कम किया है और सेवा वितरण में सुधार किया है, जिससे बेहतर जवाबदेही और पारदर्शिता सुनिश्चित हुई है । प्रत्यक्ष लाभ अंतरण (डीबीटी) योजना जैसी पहल यह सुनिश्चित करती है कि सब्सिडी और लाभ सीधे लक्षित लाभार्थियों तक पहुंचें, जिससे बिचौलियों को खत्म किया जा सके। इससे रिसाव में

काफी कमी आई है और सामाजिक कल्याण कार्यक्रमों की प्रभावशीलता में सुधार हुआ है । उदाहरण के लिए, छत्तीसगढ़ जैसे राज्यों में पीडीएस प्रणाली के डिजिटलीकरण से भ्रष्टाचार कम हुआ है और जरूरतमंदों को आवश्यक वस्तुओं के वितरण में सुधार हुआ है ।

- **शिक्षा और कौशल विकास:** डिजिटल इंडिया ने गुणवत्तापूर्ण शिक्षण संसाधनों तक पहुंच का लोकतंत्रीकरण करके शिक्षा में क्रांति ला दी है। SWAYAM प्लेटफ़ॉर्म शीर्ष संस्थानों से मुफ्त ऑनलाइन पाठ्यक्रम प्रदान करता है, जो व्यक्तियों को उनकी भौगोलिक स्थिति की परवाह किए बिना उच्च शिक्षा और कर्मदक्षता प्राप्त करने में सक्षम बनाता है। इसके अतिरिक्त, दीक्षा जैसी पहल शिक्षकों और छात्रों के लिए डिजिटल सामग्री प्रदान करती है, जिससे शिक्षा इंटरैक्टिव और आकर्षक बनती है । इस शैक्षिक क्रांति में शहरी-ग्रामीण शिक्षा के अंतर को घटाने और भविष्य के लिए एक कुशल कार्यबल तैयार करने की क्षमता है । इसने दूरस्थ शिक्षा को सक्षम बनाया है, जिससे शिक्षा अधिक समावेशी और सभी के लिए सुलभ हो गई है ।
- **स्वास्थ्य सेवाएँ:** राष्ट्रीय डिजिटल स्वास्थ्य मिशन (एनडीएचएम) नागरिकों के लिए डिजिटल स्वास्थ्य सुचना को संगृहीत कर स्वास्थ्य सेवा पहुचाने में बदलाव ला रहा है। यह पहल सटीक निदान और उपचार सुनिश्चित करते हुए स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं के बीच चिकित्सा जानकारी को निर्बाध रूप से साझा करने में सक्षम बनाती है। ई-संजीवनी जैसे टेलीमेडिसिन प्लेटफार्मों ने, विशेष रूप से कोविड-19 महामारी के दौरान, दूरस्थ परामर्श की सुविधा प्रदान की है । ये डिजिटल स्वास्थ्य सेवा समाधान शहरी और ग्रामीण स्वास्थ्य सेवाओं के बीच अंतर को पाटते हैं, जिससे सभी को गुणवत्तापूर्ण चिकित्सा सहायता सुनिश्चित होती है ।
- **कृषि और ग्रामीण विकास:** ई-एनएएम जैसे डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म ने किसानों को अपनी उपज सीधे खरीदारों को बेचने के लिए एक ऑनलाइन बाज़ार प्रदान करके सशक्त बनाया है । इसके अतिरिक्त, भारतनेट ने डिजिटल सेवाओं और सूचना पहुंच को सक्षम करते हुए ग्रामीण क्षेत्रों में हाई-स्पीड इंटरनेट कनेक्टिविटी का विस्तार किया है ।
- **स्टार्टअप और इनोवेशन:** स्टार्टअप इंडिया ने प्रोत्साहन, फंडिंग और मेंटरशिप की पेशकश करके एक जीवंत स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र का पोषण किया है। इससे उभरते क्षेत्रों में नवाचार, तकनीकी उन्नति और रोजगार सृजन को बढ़ावा मिला है ।
- **शासन में दक्षता:** डिजिटल प्लेटफॉर्म को अपनाने से सरकारी प्रक्रियाएं सुव्यवस्थित हो गई हैं और सार्वजनिक सेवाओं की दक्षता में सुधार हुआ है । डिजिटल लॉकर जैसी पहल नागरिकों को आवश्यक दस्तावेज़ संग्रहीत करने के लिए एक सुरक्षित डिजिटल स्थान प्रदान करती है । इससे भौतिक प्रतियों की आवश्यकता समाप्त हो जाती है और अनाबश्यक देरी कम हो जाती है । इसी तरह, वस्तु एवं सेवा कर नेटवर्क (जीएसटीएन) की शुरूआत ने कर प्रशासन को सरल बना दिया है, जिससे राजस्व संग्रह में वृद्धि के माध्यम से व्यवसायों और सरकार दोनों को लाभ हुआ है ।
- **आर्थिक विकास:** डिजिटल परिवर्तन ने सभी क्षेत्रों में दक्षता और उत्पादकता बढ़ाकर आर्थिक विकास में योगदान दिया है । इसने विदेशी निवेश को भी आकर्षित किया है, जिससे तकनीक-प्रेमी राष्ट्र के रूप में भारत की प्रतिष्ठा बढ़ी है ।
- **बुनियादी ढांचे का विकास:** भारतनेट जैसी पहल ने देश भर में डिजिटल बुनियादी ढांचे को मजबूत किया है, यहां तक कि दूरदराज के क्षेत्रों को भी डिजिटल दुनिया से जोड़ा है। इससे आगे की तकनीकी प्रगति का मार्ग प्रशस्त हुआ है । भारत नेट कार्यक्रम के तहत 2,74,246 किलोमीटर के ऑप्टिकल फाइबर नेटवर्क से 1.15 लाख से अधिक ग्राम पंचायतें जुड़ी हैं ।
- **नागरिकों का सशक्तिकरण:** डिजिटल इंडिया ने नागरिकों को जानकारी तक पहुंच प्रदान करके, MyGov जैसे प्लेटफार्मों के माध्यम से शासन में भागीदारी को सक्षम करके और सोशल मीडिया के माध्यम से अधिकारियों के

साथ सीधे संचार की सुविधा प्रदान करके उन्हें सशक्त बनाया है ।

- **पर्यावरणीय प्रभाव:** डिजिटलीकरण से कागज का उपयोग कम हो गया है, जिससे पर्यावरण संरक्षण में योगदान मिला है । ऑनलाइन सेवाओं ने भौतिक दस्तावेजों और कागजी कार्रवाई की आवश्यकता को कम कर दिया है, जिससे स्थिरता को बढ़ावा मिला है ।
- **वैश्विक मान्यता:** डिजिटल इंडिया पहल ने अंतर्राष्ट्रीय ध्यान और मान्यता प्राप्त की है, जिससे भारत डिजिटल परिवर्तन और तकनीकी नवाचार में अग्रणी बन गया है। कई विकसित और महाशक्ति देशों ने माननीय प्रधानमंत्री द्वारा शुरू किए गए इस अभियान में रुचि दिखाई है, जैसे: संयुक्त राज्य अमेरिका, जापान, दक्षिण कोरिया, यूनाइटेड किंगडम, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, मलेशिया, सिंगापुर, उज्बेकिस्तान, वियतनाम आदि । यह भी हमारे लिए काफी गौरव की बात है ।

- भारत सरकार के राष्ट्रीय ई-गवर्नेंस प्रोजेक्ट के तहत बनाया गया एक सामान्य सेवा केंद्र (सीएससी); सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) में संगृहीत तथ्य व सूचनाएं प्रदान करता है। कंप्यूटर और इंटरनेट एक्सेस के माध्यम से, सीएससी ई-गवर्नेंस, शिक्षा, स्वास्थ्य, टेलीमेडिसिन, मनोरंजन और अन्य सरकारी और निजी सेवाओं से संबंधित मल्टीमीडिया सामग्री प्रदान करते हैं ।
- डिजिटल इंडिया परियोजना का जीवन के सभी क्षेत्रों के व्यक्तियों पर गहरा प्रभाव पड़ा है। इसका समाज की उन्नति और व्यक्ति के जीवन पर लाभकारी प्रभाव पड़ता है। सैकड़ों कार्यक्रमों में से एक का लक्ष्य देश भर में 28,000 बीपीओ रोजगार सृजित करना है । इसके अलावा, इसने प्रत्येक ग्राम पंचायत में एक सामान्य सेवा विभाग की स्थापना की है ।
- साथ ही, सोलर लाइटिंग, एलईडी असेंबली यूनिट, सेनेटरी नैपकिन प्रोडक्शन यूनिट और वाई-फाई चौपाल जैसी सभी सुविधाओं के साथ डिजिटल गांवों की स्थापना संभव हुआ है ।
- इंटरनेट डेटा का उपयोग सेवाओं की वितरण के लिए एक प्रमुख उपकरण के रूप में किया जाता है और आज के समय मे इंटरनेट संयुक्तीकरण हमारे देश में 64% तक पहुंच गई है, जोकि एक बेहद ही सरहनीय आंकड़ा है ।

डिजिटल इंडिया मिशन का हमारे देश के विकास पर बहुत ही महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है । यह अनुमान लगाया गया है कि यह अभियान भारत की जीडीपी को 1 ट्रिलियन डॉलर तक बढ़ा सकता है और सरकार वर्तमान में इसे 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था में बदलने का प्रयास कर रही है। भारत सरकार का यह महान उद्यम देश भर में 18 लाख से अधिक रोजगार के अवसर प्रदान करके सकारात्मक परिणाम देने का भी आभास देता है । यह डिजिटल इंडिया मिशन और इसके तहत होने वाली डिजिटल जागरूकता अवश्यंभावी रूप से हमारे देशवासिओं के लिए वरदान साबित हुआ है एवं आज मैं यह भी घोषणा करता हूँ कि निकट-भविष्य में यह डिजिटल इंडिया मिशन हमारे देश को समग्र विश्व में शीर्ष स्थान पर पदस्थापित करेगा ।

डिजिटल दशक व तकनीकी नवाचार

अभिनव कुमार
प्रबंधक - ऋण
मंडल कार्यालय न्यू जलपाईगुड़ी

"डिजिटल दशक" भारत के डिजिटल परिवर्तन में 2020 के दशक को एक महत्वपूर्ण चरण के रूप में चिह्नित करता है, जहाँ प्रौद्योगिकी समावेशी विकास के लिए एक उत्प्रेरक के रूप में कार्य करती है। इंटरनेट पहुँच, डिजिटल सेवाओं और बुनियादी ढाँचे के तीव्र विस्तार के साथ, इसमें लोकतंत्र को सशक्त बनाने , सेवाओं का विकेंद्रीकरण करने और अवसरों का लोकतांत्रिक बनाने की क्षमता निहित है, जो न केवल प्रौद्योगिकी, बल्कि भारत के सामाजिक-आर्थिक ताने-बाने को भी प्रभावित करेगा।

जब इसे जिम्मेदारीपूर्वक अपनाया जाए तो डिजिटल नवाचार गहन और सतत् समावेशिता को प्रोत्साहित करता है, जिससे किसानों से लेकर जनजातीय महिलाओं तक अत्यंत वंचित वर्गों को भी आवश्यक सेवाएँ प्राप्त करने में सहायता मिलती है। फिनटेक, एड-टेक और ई-गवर्नेंस पारंपरिक भौगोलिक , जाति, वर्ग और लैंगिक संबंधी बाधाओं को समाप्त कर सकता हैं। हालाँकि, यह परिवर्तन सोचसमझकर किया जाना चाहिए, ताकि सभी के लिए समान पहुँच और डिजिटल साक्षरता सुनिश्चित हो सके।

आधार, यूपीआई और डिजिलॉकर जैसे प्लेटफॉर्म के साथ-साथ स्वास्थ्य, शिक्षा और वाणिज्य में तकनीक के माध्यम से भारत में हो रहा विकास एक नए आयाम स्थापित कर रहा है। दूरदर्शिता और न्याय के साथ, डिजिटल दशक प्रत्येक नागरिक को डिजिटल क्रांति में एक हितधारक बना सकता है, जिससे भारत सशक्त होगा और वैश्विक दक्षिण के लिए एक आदर्श के रूप में प्रस्तुत होगा।

UPI, आधार-सक्षम भुगतान जैसे डिजिटल नवाचार और ONDC जैसे प्लेटफॉर्म सुरक्षित लेनदेन और व्यापक बाजारों तक निष्पक्ष पहुँच को सक्षम करके छोटे विक्रेताओं और गिग वर्कर्स को सशक्त बना रहे हैं। यह ई-कॉमर्स के क्षेत्र में समान अवसर उपलब्ध कराकर वित्तीय स्वतंत्रता और समावेशी आर्थिक विकास को प्रोत्साहन देता है।

कृषि-प्रौद्योगिकी एवं वित्त-प्रौद्योगिकी के स्टार्टअप ग्रामीण बाजार तक पहुँच बढ़ाकर ग्रामीण आय एवं उद्यमशीलता को सशक्त कर रहे हैं, वहीं प्रत्यक्ष लाभ अंतरण जैसे प्रशासनिक सुधार पारदर्शी, समयबद्ध एवं दुरुपयोगरहित कल्याण वितरण सुनिश्चित कर ग्रामीण सशक्तीकरण को और सुदृढ़ कर रहे हैं।

प्रौद्योगिकी-संचालित प्लेटफ़ॉर्म आवश्यक सेवाओं तक पहुँच में सुधार करके अनौपचारिक श्रमिकों और वंचित समुदायों को सशक्त बना रहे हैं। ई-श्रम पोर्टल ने लाखों लोगों को कल्याणकारी योजनाओं से जोड़कर उन्हें औपचारिक अर्थव्यवस्था में शामिल किया है, जबकि दीक्षा, स्वयं और पीएम ई-विद्या जैसे डिजिटल शिक्षा प्लेटफॉर्म दूरदराज और वंचित क्षेत्र के छात्रों को निःशुल्क, बहुभाषी सामग्री प्रदान कर शैक्षिक अंतराल को कम कर रहे हैं।

टेलीमेडिसिन और डिजिटल वाणिज्य, वंचित क्षेत्रों में पहुंच और अवसरों का विस्तार कर रहे हैं। ई-संजीवनी जैसे प्लेटफॉर्म दूरस्थ परामर्श के माध्यम से ग्रामीण स्वास्थ्य सेवा के अंतराल को कम रहे हैं, जबकि GeM जैसी पहल महिलाओं के नेतृत्व वाले स्टार्टअप और स्वयं सहायता समूहों

को व्यापक बाजारों से जोड़कर उन्हें सशक्त बनाती है, जिससे उनकी आर्थिक स्वतंत्रता और डिजिटल समावेशन में वृद्धि होती है।

ई-गवर्नेंस प्लेटफॉर्म ने सार्वजनिक सेवा वितरण को अधिक कुशल, पारदर्शी और नागरिक-केंद्रित बना दिया है। उमंग, डिजिलॉकर और आरोग्य सेतु जैसे प्लैटफॉर्म हजारों सेवाओं तक पहुँच प्रदान करते हैं, जबकि CPGRAMS और RTI ऑनलाइन त्वरित शिकायत निवारण के माध्यम से जवाबदेही में वृद्धि करते हैं और शासन में विश्वास को सुदृढ़ करते हैं।

शासन में AI का एकीकरण डेटा-संचालित नीतियों और वास्तविक समय संसाधन प्रबंधन को सक्षम करके प्रशासनिक दक्षता और निर्णय लेने की क्षमता को बढ़ा रहा है। यातायात नियंत्रण और आपदा प्रतिक्रिया से लेकर वैक्सीन वितरण के लिए कोविन (CoWIN)जैसे प्लेटफार्मो तक, AI और एनालिटिक्स अधिक प्रभावी, समावेशी और न्यायसंगत सार्वजनिक सेवा वितरण सुनिश्चित करते हैं।

समावेशन भौगोलिक, सामाजिक, आर्थिक और डिजिटल आयामों तक विस्तारित है, जिसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि भारत की विकास यात्रा में कोई भी पीछे न छूटे।

भौगोलिक समावेशन भारत के डिजिटल परिवर्तन का एक प्रमुख स्तंभ है, जो यह सुनिश्चित करता है कि सबसे दूरस्थ क्षेत्र भी डिजिटल क्रांति में पीछे न छूटें, तथा आवश्यक सेवाएं सभी के लिए सुलभ हों। उदाहरण के लिए, भारतनेट ग्रामीण और दूरदराज के क्षेत्रों में इंटरनेट कनेक्टिविटी का विस्तार कर रहा है, जिससे नागरिकों को सरकारी सेवाओं, स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा और अन्य महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे तक पहुंच बनाने में मदद मिल रही है, जो पहले संभव नहीं था।

डिजिटल माध्यमों के द्वारा लैंगिक समावेशन महिलाओं को सशक्त बना रहा है, उन्हें आधुनिक अर्थव्यवस्था में आगे बढ़ने के लिए वित्तीय संसाधनों, उद्यमशीलता के अवसरों और डिजिटल उपकरणों तक पहुंच प्रदान कर रहा है। उदाहरण के लिए, डिजिटल माइक्रो-क्रेडिट प्लेटफॉर्म और स्वयं सहायता समूहों का डिजिटलीकरण महिला उद्यमियों को ऋण, बाजार और संसाधनों तक पहुंच प्रदान कर रहा है, जिससे वित्तीय स्वतंत्रता और आर्थिक सशक्तीकरण की बाधाएं दूर हो रही हैं।

वित्तीय समावेशन में अभूतपूर्व प्रगति हुई है, डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से लाखों लोगों को औपचारिक बैंकिंग सेवाओं तक पहुंच प्राप्त हुई है, जिससे समाज के सभी वर्गों में आर्थिक भागीदारी को बढ़ावा मिला है। उदाहरण के लिए, 50 करोड़ से अधिक जन-धन खाते खोले जाने से बैंकिंग सेवाओं से वंचित लाखों भारतीयों को, विशेष रूप से ग्रामीण और वंचित क्षेत्रों में, वित्तीय सेवाओं और सरकारी सब्सिडी तक पहुंच प्रदान करके सशक्त बनाया गया है।

डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से शैक्षिक समावेशन को उल्लेखनीय रूप से प्रोत्साहन प्राप्त हो रहा है, जिससे देश भर के छात्रों, विशेष रूप से वंचित क्षेत्रों के छात्रों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षण संसाधनों तक पहुँच प्राप्त करने में मदद मिल रही है। उदाहरण के लिए, NEP 2020 में डिजिटल शिक्षा पर बल और एडटेक प्लेटफॉर्म के उदय से यह सुनिश्चित हो रहा है कि सभी पृष्ठभूमि के छात्रों को शैक्षिक संसाधनों तक समान पहुँच प्राप्त हो, जिससे पूरे देश में शैक्षणिक परिणामों में सुधार हो रहा है।

भाषाई और सांस्कृतिक समावेशन भारत के डिजिटल विकास का एक महत्वपूर्ण पहलू है, जो यह सुनिश्चित करता है कि सभी नागरिक अपनी मूल भाषाओं में सेवाओं और सूचनाओं तक पहुंच प्राप्त कर सकें। उदाहरण के लिए, स्थानीय भाषा की सामग्री, ध्वनि-आधारित प्रौद्योगिकियां और AI आधारित अनुवाद टूल्स लाखों लोगों को अपनी स्थानीय भाषाओं में डिजिटल सेवाओं से जुड़ने में सक्षम बना रहे हैं, जिससे गैर-अंग्रेजी भाषी नागरिकों के लिए बेहतर पहुंच सुनिश्चित हो रही है।

डिजिटल यात्रा में सशक्तीकरण की अपार संभावनाएं हैं, लेकिन वास्तविक, सार्वभौमिक समावेशन सुनिश्चित करने के लिए गंभीर चुनौतियों का समाधान किया जाना चाहिए। ये बाधाएं डिजिटल समावेशी समाज के समग्र लक्ष्य की प्राप्ति में रुकावट पैदा कर सकती हैं।

डिजिटल विभाजन एक बड़ी बाधा बनी हुई है, विशेषकर शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच। जबकि शहरों में डिजिटल सेवाओं के लिए बुनियादी ढांचा मौजूद है, ग्रामीण क्षेत्रों में अक्सर उन्नत इंटरनेट सेवा का अभाव होता है, जिससे स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा और डिजिटल अर्थव्यवस्था तक पहुंच

सीमित हो जाती है। इसके अतिरिक्त, महिलाओं एवं वरिष्ठ नागरिकों में डिजिटल साक्षरता की कमी तथा उपकरणों की सीमित वहनीयता सामाजिक-आर्थिक असमानताओं को और गहरा करने का जोखिम उत्पन्न करती है।

जैसे-जैसे डिजिटल समावेशन में वृद्धि होती है, साइबर सुरक्षा और डेटा गोपनीयता के जोखिम भी बढ़ते जाते हैं, विशेष रूप से ग्रामीण जनसंख्या और महिलाओं जैसे सुभेद्य समूहों के लिए। शोषण को रोकने और सुरक्षित डिजिटल सशक्तीकरण को सुनिश्चित करने के लिए डिजिटल व्यक्तिगत डेटा संरक्षण अधिनियम, 2023 को लागू करना महत्वपूर्ण है।

प्लेटफॉर्म आधारित पूँजीवाद के कारण कुछ बड़ी प्रौद्योगिकी कम्पनियों का बाजार पर प्रभुत्व बढ़ गया है, जिससे प्रतिस्पर्धा और उपभोक्ता विकल्प सीमित हो गए हैं। बड़ी कंपनियों को प्राथमिकता देने वाले प्रमुख ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म पर सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम तथा स्थानीय विक्रेता संघर्ष कर रहे हैं, जिससे लघु व्यवसायों के निष्पक्ष एवं सतत विकास में बाधा उत्पन्न हो रही है।

डिजिटल अर्थव्यवस्था के तीव्र विकास के बावजूद, डिजिटल साक्षरता कम बनी हुई है, विशेष रूप से ग्रामीण और हाशिए पर स्थित समुदायों में, जिससे उनकी भागीदारी सीमित हो रही है। इस अंतर को कम करने के लिए बड़े पैमाने पर क्रियान्वित कौशल कार्यक्रमों जैसे PMGDISHA और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) तथा इंटरनेट ऑफ थिंग्स (IoT) में प्रशिक्षण की आवश्यकता है ताकि व्यक्तियों को आर्थिक और सामाजिक सशक्तीकरण के लिए आवश्यक डिजिटल कौशल से सक्षम किया जा सके।

समावेशी सरकारी पहलों द्वारा संचालित भारत का डिजिटल परिवर्तन यह सुनिश्चित करता है कि तकनीकी विकास सभी नागरिकों, विशेषकर हाशिए पर पड़े लोगों तक पहुंचे, जिससे एक अधिक समतापूर्ण डिजिटल भविष्य को बढ़ावा मिले।

इंडिया स्टैक अंतर-संचालनीय डिजिटल प्लेटफार्मों का एक समूह है जो सार्वजनिक सेवाओं तक सुरक्षित, निर्बाध पहुंच को सक्षम बनाता है। आधार, यूपीआई, डिजिलॉकर और अकाउंट एग्रीगेटर प्रणाली नागरिकों को वित्तीय सेवाओं, दस्तावेज़ों और डेटा साझाकरण तक सुगम पहुँच प्रदान करके उन्हें सशक्त बनाती है। ये सभी मंच मिलकर एक डिजिटल पारिस्थितिकी तंत्र का मूलाधार निर्मित करते हैं, जो समावेशी विकास को प्रोत्साहित करता है एवं यह सुनिश्चित करता है कि कोई भी डिजिटल अर्थव्यवस्था से वंचित न रहे।

राष्ट्रीय डिजिटल स्वास्थ्य मिशन (NDHM) रोगी-केंद्रित डिजिटल स्वास्थ्य रिकॉर्ड पर ध्यान केंद्रित करता है, जिससे स्वास्थ्य सेवा अधिक सुलभ और कुशल बनती है। आधार को स्वास्थ्य रिकॉर्ड के साथ एकीकृत करके, NDHM शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों के नागरिकों को समय पर स्वास्थ्य सेवाएं प्राप्त करने की सुविधा प्रदान करता है, जिससे सभी के लिए, विशेष रूप से वंचित लोगों के लिए समान स्वास्थ्य सेवा तक पहुंच सुनिश्चित होती है।

ONDC (डिजिटल कॉमर्स के लिए खुला नेटवर्क) छोटे व्यवसायों और स्थानीय विक्रेताओं को बड़ी कंपनियों के साथ समान स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने में सक्षम बनाकर डिजिटल बाज़ारों में बदलाव ला रहा है। प्रवेश संबंधी बाधाओं को कम करने वाला मंच प्रदान करके, ओएनडीसी छोटे विक्रेताओं को सशक्त बनाता है, यह सुनिश्चित करता है कि डिजिटल अर्थव्यवस्था समावेशी हो, जिससे उन्हें व्यापक उपभोक्ताओं तक पहुंचने में मदद मिले।

पीएलआई योजनाएँ स्वदेशी नवाचार को बढ़ावा दे रही हैं, विशेष रूप से सेमीकंडक्टर और इलेक्ट्रॉनिक्स उद्योगों में। घरेलू विनिर्माण को प्रोत्साहित करके, ये योजनाएं विदेशी तकनीक पर निर्भरता कम करती हैं, रोजगार सृजन करती हैं और आत्मनिर्भरता को प्रोत्साहन देती हैं। यह पहल वैश्विक तकनीक में भारत की स्थिति को सुदृढ़ करती है और स्थानीय स्तर पर अत्याधुनिक प्रौद्योगिकियों के विकास को प्रोत्साहित करती है।

भारत तेजी से डिजिटल नवाचार में एक वैश्विक अग्रणी के रूप में उभर रहा है, डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना (डीपीआई) में इसकी अग्रणी पहल को G-20 और विश्व बैंक जैसे अंतर्राष्ट्रीय संगठनों से प्रशंसा मिल रही है। अंतर-संचालनीय और मापनीय डिजिटल समाधान तैयार करके भारत समावेशी वृद्धि और विकास के लिए प्रौद्योगिकी का लाभ उठाने के इच्छुक अन्य देशों के लिए एक मानक स्थापित कर रहा है।

इंडिया स्टैक एक प्रमुख तत्व साधन बन गया है,

जिसके डिजिटल प्लेटफॉर्म को श्रीलंका और फिलीपींस जैसे विकासशील देशों द्वारा अपनाया जा रहा है। ये देश भारत को एकीकृत डिजिटल समाधानों के लिए एक आदर्श के रूप में देख रहे हैं, जो वित्तीय समावेशन, सार्वजनिक सेवा वितरण और नागरिक सशक्तीकरण को बढ़ावा दे सकता है, जिससे वे अपनी डिजिटल यात्रा में भारत की सफलता को दोहरा सकेंगे।

भारत का लक्ष्य अपनी तकनीकी प्रतिभा और पारिस्थितिकी तंत्र का लाभ उठाकर AI और डिजिटल नवाचार में वैश्विक नेतृत्वकर्ता बनना है। वैश्विक तकनीकी कंपनियों के साथ सहयोग करते हुए, यह डेटा संप्रभुता को प्राथमिकता देता है और एक परस्पर संबद्ध विश्व में राष्ट्रीय हितों और गोपनीयता की सुरक्षा करता है।

प्रौद्योगिकी को एक साधन के रूप में देखा जाना चाहिए, न कि साध्य के रूप में। इसका ध्यान केवल अपने लिए तकनीकी प्रगति को बढ़ावा देने के बजाय मानव कल्याण संवर्धन और व्यक्तियों को सशक्त बनाने के व्यापक उद्देश्य की पूर्ति पर होना चाहिए। नवाचार का अंतिम लक्ष्य मानवीय गरिमा होना चाहिए, यह सुनिश्चित करते हुए कि प्रौद्योगिकी असमानताएँ उत्पन्न करने के बजाय समाज के उत्थान में सहायक हो।

नैतिक नवाचार में न्याय, समानता और मानवता को प्राथमिकता दी जानी चाहिए, तथा यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि डिजिटल उपकरण सभी व्यक्तियों, विशेषकर संवेदनशील वर्ग के प्रति सम्मान को ध्यान में रखकर डिजाइन किए जाएं। यह महत्वपूर्ण है कि डिजिटल प्लेटफॉर्म और सेवाओं को निष्पक्षता पर ध्यान केंद्रित करते हुए विकसित किया जाए, यह सुनिश्चित किया जाए कि वे समाज के सभी वर्गों के लिए सुलभ हों, और मौजूदा सामाजिक विभाजन को सुदृढ़ किए बिना समावेशी प्रगति को प्रोत्साहन दें।

जैसे-जैसे हम प्रौद्योगिकी की शक्ति को आत्मसात कर रहे हैं, यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि डिजिटल प्लेटफॉर्म बहिष्कार या निगरानी का साधन न बन जाएं। प्रौद्योगिकी को विशेषाधिकार प्राप्त और हाशिए पर पड़े लोगों के बीच के अंतर को बढ़ाना नहीं चाहिए; इसके बजाय, इसे लोगों को एक साथ लाने का कार्य करना चाहिए, यह सुनिश्चित करते हुए कि यह सशक्तीकरण का एक उपकरण है न कि नियंत्रण का तंत्र। व्यक्तिगत स्वतंत्रता और निजता के हनन से बचने के लिए डिजिटल प्लेटफॉर्म पर बढ़ती निर्भरता को सावधानीपूर्वक प्रबंधित किया जाना चाहिए।

"प्रौद्योगिकी को स्वतंत्रता और बंधुत्व की सेवा करनी चाहिए" यह आदर्श दर्शाता है कि डिजिटल प्रगति को स्वतंत्रता, सामाजिक एकता और न्याय के मूल्यों को बनाए रखना चाहिए। जैसे-जैसे नवाचार समाज को नया स्वरुप प्रदान करता है, तो इसे इस प्रकार संचालित किया जाना चाहिए कि यह समानता को बढ़ावा दे, गरिमा की रक्षा करे और प्रत्येक व्यक्ति को सशक्त बनाए, जिससे तकनीकी प्रगति एक समावेशी एवं मानवीय भविष्य की ओर अग्रसर हो।

डिजिटल अवसंरचना एक अधिकार के रूप में, डिजिटल विभाजन को कम करने के लिए, इंटरनेट तक पहुंच को जल अथवा विद्युत की भांति इसे एक बुनियादी आवश्यकता माना जाना चाहिए। हाई-स्पीड इंटरनेट की सार्वभौमिक पहुँच ग्रामीण समुदायों को सशक्त बना सकती है, शासन व्यवस्था में सुधार कर सकती है और आर्थिक भागीदारी को बढ़ावा दे सकती है। लास्ट माइल कनेक्टिविटी सुनिश्चित करने के लिए भारतनेट और 5जी विस्तार में तेजी लाई जानी चाहिए। डिजिटल अवसंरचना को एक अधिकार के रूप में मान्यता देना जो प्रौद्योगिकी को सामाजिक न्याय के साथ संरेखित करता है।

नवाचार को लोकतांत्रिक बनाने के लिए महिलाओं और युवाओं के लिए लक्षित कौशल कार्यक्रम आवश्यक हैं। PMGDISHA, एआई-आधारित कोडिंग बूटकैंप और टिंकरिंग लैब जैसी पहल डिजिटल साक्षरता संबंधी अंतराल को कम कर सकती हैं। भारत के डिजिटल परिवर्तन का नेतृत्व करने के लिए इस जनसांख्यिकीय लाभांश का उपयोग किया जाना चाहिए। समावेशी नवाचार का अर्थ है उन लोगों को सशक्त बनाना जो ऐतिहासिक रूप से तकनीकी क्रांतियों से वंचित रहे हैं।

डिजिटल भारत केवल अंग्रेजी प्लेटफॉर्म पर ही सफल नहीं हो सकता है। स्थानीय भाषा की सामग्री, वॉइस इंटरफ़ेस और AI-संचालित अनुवाद उपकरणों को बढ़ावा देकर सांस्कृतिक और भाषाई अंतर को कम किया जा सकता है। भाषिनी जैसे प्लेटफ़ॉर्म और स्थानीय एडटेक ऐप् लाखों लोगों को इससे जोड़ सकते हैं। इससे यह सुनिश्चित होता है

कि नवाचार प्रत्येक भारतीय की भाषा बोले।

जैसे-जैसे डिजिटल पहुंच बढ़ती जा रही है,सशक्त साइबर कानूनों के माध्यम से नागरिकों की सुरक्षा करना अनिवार्य हो गया है। डिजिटल व्यक्तिगत डेटा संरक्षण अधिनियम, 2023 को जवाबदेही और नागरिक-केंद्रितता के साथ लागू किया जाना चाहिए। नैतिक ढांचे को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि प्रौद्योगिकी गरिमा, निजता और न्याय को बनाए रखे। विश्वास के बिना तकनीक वास्तव में समावेशी नहीं हो सकती।

डिजिटल समावेशन को बढ़ाने के लिए सहयोगात्मक प्रयास की आवश्यकता है। सार्वजनिक निजी भागीदारी (PPP) किफायती उपकरणों, स्थानीय भाषा की विषय-वस्तु और अंतिम छोर तक डिजिटल साक्षरता के क्षेत्र में नवाचार को बढ़ावा दे सकती है। निजी क्षेत्र की सक्रियता को समावेशन और सशक्तीकरण के सार्वजनिक लक्ष्यों के साथ संरेखित किया जाना चाहिए। साथ मिलकर, वे एक ऐसे डिजिटल पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण कर सकते हैं जो सुलभ, सुरक्षित और समतापूर्ण हो।

आज भारत एक परिवर्तनकारी राह पर खड़ा है, जहाँ उसका जनसांख्यिकीय लाभांश, तकनीकी क्षमताएँ एवं प्रगतिशील नीतिगत ढाँचा एक साथ अभिसमाहित हो रहे हैं। युवा जनसंख्या एवं UPI तथा आधार जैसी डिजिटल पहलों की उपलब्धता से, भारत समावेशिता एवं व्यापकता पर आधारित तकनीकी-संचालित विकास के नए मॉडल को आकार देने की विशिष्ट स्थिति में है।

डिजिटल इंडिया ने ग्रामीण क्षेत्रों को मुख्यधारा से जोड़ते हुए पारदर्शी शासन को सशक्त किया है और डिजिटल भुगतान, इंटरनेट विस्तार तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता व सेमीकंडक्टर में प्रगति के माध्यम से नवाचार को गति प्रदान कर राष्ट्र को रूपांतरित कर दिया है। जैसे-जैसे भारत विकसित भारत के दृष्टिकोण की ओर अग्रसर हो रहा है, डिजिटल इंडिया समावेशी विकास का उत्प्रेरक बनकर नागरिकों को सशक्त बनाता है तथा देश को वैश्विक तकनीकी नेतृत्व के पथ पर स्थापित करता है। आगामी दशक गहरे परिवर्तन की संभावनाओं से पूर्ण है, जहाँ प्रौद्योगिकी सशक्त, स्मार्ट और आत्मनिर्भर भारत की आधारशिला होगी।

पंजाब नैशनल बैंक

देश का बड़ा बैंक पंजाब नैशनल बैंक
महान स्वतंत्रता सेनानी मा० लाला लाजपत राय जी की सोच
का यह परिणाम,
12 अप्रेल 1895 को अनारकली लाहोर में हुआ इसका निर्माण
129 साल की इतिहास मे हमने हर शिखर को चूमा।
हर ग्राहक के विश्वास हमने दिल से जीता है।
देश का बड़ा बैंक ....
इतिहास है PNB की ऐसी, रोम रोम पुलकित करता है।
जिस ग्राहक का खाता होता, किस्मत से कम ना समझते हैं।
राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, भगत सिंह, जालियांवाला बाग
कमेटी का भी हमसे गहरा रिश्ता है।
देश का बड़ा बैंक ...
तरह-तरह की मुश्किलें आई,
पर ना जाने हर मुश्किल का सामना करने का हौसला
मैने पाया है।
हर मुश्किलों से लड़कर, नया इतिहास बनाया है।
देश का बड़ा बैंक
अपने जज्बातों को ना होने दो भारी
उठा लो इस हालात को दिल से सभी की है ज़िम्मेवारी
हम चाहें तो सब मुमकिन हो सकता,
इतिहास को फिरसे दोहराने को
भारतवर्ष का श्रेष्ठ बैंक बनाने को
संकल्प है यहि मन में अपने
उत्साह कभी ना होंगे कम
बढ़े थे, बढ़े हैं, और बढ़ते रहेंगे
देश का बड़ा बैंक पंजाब नैशनल बैंक ।

प्रदीप कुमार
प्रबंधक
सीबीबी दुर्गापुर

डिजिटल बैंकिंग ईकाइयाँ (DBU)

राम कुमार विश्वकर्मा
मुख्य प्रबंधक (अवकाश प्राप्त)
अंचल कार्यालय, दुर्गापुर

बैंको का आटोमेशन या कम्प्यूटरीकरण सन् 1980 में "रंगराजन कमीटि" के सिफारिशों के पश्चात् लागू किया गया तदोपरांत भारतीय बैंकिंग क्षेत्र में अभूतपूर्व परिवर्तन व इसका प्रभाव अब परिलक्षित हैं। इनमें 'कोर बैंकिंग सोल्यूशन (CBS), एटीएम, विभिन्न इलेक्ट्रानिक भुगतान, जैसे NEFT, RTGS तथा 24x7 (कही भी कभी भी - Anywhere Any time) बैंकिंग शामिल है। इसके साथ ही UPI (यूनीफाईड पेमेंट इंटरफेस) प्रणाली ने संपूर्ण बैंकिंग व वित्तीय लेनदेन में पूरे देश में क्रांतिकारी बदलाव कर दिया है। अब तो UPI से अंतराष्ट्रीय भुगतान भी हो रहा है तथा भारत वर्ष के इस विकाश यात्रा के संपूर्ण विश्व विस्मित हो देख रहा है

DBU की अवधारणा 2022-23 के केन्द्रीय बजट भाषण में हमारे वित्त मंत्री ने देश के आजादी के 75 साल पूरे होने के उपलक्ष्य में पूरे देश के चुनिंदा 75 जिलों में 75 DBU स्थापित करने के लक्ष्य व संकल्प के साथ शुरु किया/व्य

परिचय :-

DBU अनुसूचित वाणिज्यिक बैंको द्वारा स्थापित एक विशिष्ट फिक्स्ड बिजनेस यूनिट केन्द्र या हब है, जो डिजिटल बैंकिंग उत्पादों और सेवाओं को विस्तारित करने के साथ-2 मौजूदा वित्तीय उत्पादों और सेवाओं को किसी भी समय डिजिटल रूप से स्वयं-सेवा मोड़ में सेवा देने के लिए कुछ न्यूनतम डिजिटल बुनियादी ढाँचे को स्थापित करता हैं ।

सरकार द्वारा DBU की स्थापना का मुख्य उद्देश्य डिजिटल बैंकिग का लाभ समग्र राज्य व केन्द्र शासित पदेशो को मिल सके तथा अंततोगत्वा साधारण जनता तक पहुँचे

DBU के लाभ :-

- यदि हम DBU के लाभ के बारे में बात करे तो यह उनलोगो को सक्षम बनायेगा जिनके पास सूचना व संचार प्रौद्योगिकी (ICT) का बुनियादी ढाँचा नहीं है एवं बैंकिग सेवाओं तक डिजिटल रूप से अपनी पहुँच बना सकते है।
- यह उन लोगो की भी सहायता करेगा जो डिजिटल बैंकिंग अपनाने के लिए तकनीकी रूप से सक्षम नहीं है।.

DBU द्वारा प्रदत्त सेवाएँ :-

- DBU में ग्राहको को अपना बचत खाता खोलने, खाते में शेष राशि पता करने, पासबुक प्रिंटिंग कराने, पैसे का संप्रेषण, सावधि जमा में निर्देश के आलावा क्रेडिट / डेबिट कार्ड की सुविधा के साथ-2 ऋण के आवेदन तथा उसका भुगतान तथा विभिन्न बिलों बीके भुगतान की पूर्ण सुविधा प्राप्त होगी।
- DBU "जैन समर्थ" पोर्टल के माध्यम से सरकारी क्रेडिट लिंक योजनाओं और msme / खुदरा ऋणों के एंड टू एंड' डिजिटल प्रसंस्करण की सुविधा भी उपलब्ध रहेगी

पारंपरिक बैंकों व DBU में अंतर

1. DBU 24x7 नगद जया व निकासी सहित अन्य बैंकिंग सेवाएँ प्रदान करेगा !
2. DBU में सेवाएँ संपूर्ण रूप से डिजिटल होगी।
3. जिन लोगो के पास कनेक्टीभीटी या कम्प्यूटिंग डिवाईस नहीं है, वे DBU से पेपर लेस मोड मैं भी बैंकिंग लेनदेन कर सकते हैं
4. बैंकिंग लेनदेन के लिए बैंक कर्मचारी सहायता मोड मैं उचित मार्ग दर्शन हेतु उपलब्ध रहेंगे ।
5. DBU लोगो में डिजिटल वित्तीय सहायता प्रदान करने के लिए और इसे सहज अपनाने के लिए जागरूकता पैदा करने में मदद करेंगे।

डिजिटल बैंको और DBU के बीच अंतर : -

बैलेंस शीट / कानुनी मान्यता : -

1. DBU के पास कानुनी मान्यता नहीं है और उन्हें बैंकिंग विनियमन अधिनियम, 1949 के तहत लाइसेंस नहीं दिया गया है।
2. कानूनी रूप से वे "बैंकिंग आउटलेट" अर्थात् शाखाओं के समकक्ष हैं।
3. डिजिटल बैंकों, बैंकिंग विनियमन

अधिनियम, 1949 के तहत विधिवत लाइसेंस प्राप्त एक बैंक है, जिनके पास एक बैलेंस शीट और कानूनी अस्तित्व है।

नवाचार / प्रतिस्पर्धा का स्तर :

1. DBU डिजिटल चैनलों को नियामक मान्यता प्रदान करके मौजदा चैनल बैंकिंग व्यवस्था में सुधार है, हालाकि, वे प्रतिस्पर्धा पर चुप्पी साधे हुए है।
2. DBU दिशा-निर्देश स्पष्ट रूप से बताते है कि केवल मौजुदा वाणिज्यिक बैंक DABU स्थापित कर सकते है।
3. इसके विपरीत यहाँ प्रस्तावित डिजिटल बैंको के लिए लाइसेंसिंग और नियामक ढाँचा प्रतिस्पर्धा/ नवाचार आयामों के साथ अधिक सक्षम हैं।

भारत के वीर जवान

भारतीय सेना को हमसब करते हैं शत-शत नमन
सुरक्षा और सेवा द्वारा भारत को रखते हैं अमन
बुलंद है सेना का मनोबल बुलंद है उनका हौसला
उनको यथार्थ सम्मान देने का हमने किया है फैसला ।।

चट्टान बनकर रहते हैं खड़े अगर कोई आए अड़े
अपना जीवन कर दे बलिदान जब भी आन पड़े
भारतवासीयों को गर्व है उनपर, उनपर है हमें नाज़
क्या-क्या कठिन काम करते हैं नहीं है हमें अंदाज ।।

देश में अगर कोई आए विपत्ति बाढ़ या तूफान
फ़ौरन हाजिर हो जाते हैं भारत के वीर जवान
अपनी जान को जोखिम में डाल देते हैं हमें सुरक्षा
इनसे हमें लेनी चाहिए जीवन जीने की शिक्षा ।।

तिरंगा झंडा या बंदुक लिए सेना जब बढ़ते हैं आगे
दुश्मनों का झुंड भी आखिर डर कर पीछे भागे
हमारे जवानों के खातिर खिलता है भारत का चमन
भारतीय सेना को करते हैं हम-सब शत-शत नमन ।।

शंकर बनिक
सेवानिवृत अधिकारी
अंचल कार्यालय, दुर्गापुर

"डिजिटल अरेस्ट" एक नया जाल

राम कुमार विश्वकर्मा
मुख्य प्रबंधक आईटी
अंचल कार्यालय दुर्गापुर

जब स्क्रीन पर दिखने वाला "पुलिस अधिकारी" आपकी लाइफ सेविंग उड़ा ले जाए एक नियोजित धोखाधड़ी है।

पिछले कुछ महीनों में भारत में एक नए किस्म का साइबर फ्रॉड तेज़ी से फैला है जिसे "डिजिटल अरेस्ट " कहते हैं। इसमें फ्रॉडस्टर्स खुद को सीबीआई, ईडी, नारकोटिक्स या कस्टमस का अधिकारी बताते हैं और वीडियो कॉल पर पीड़ित को घंटों - कभी-कभी दिनों तक डराकर रखते हैं।

पीड़ित को कहा जाता है: "आपके आधार से अवैध पार्सल पकड़ी गई है," या "आपके खाते से मनी लौंडेरींग हुई है।" फिर शुरू होता है मनोवैज्ञानिक दबाव का खेल - यूनिफार्म, नकली आइडी कार्ड, और बैकग्राउंड में पुलिस स्टेशन जैसा सेटअप सब कुछ इतना रियल लगता है कि पढ़े-लिखे, समझदार लोग भी जाल में फंस जाते हैं।

“भारतीय कानून में 'डिजिटल अरेस्ट' जैसी कोई चीज़ है ही नहीं- यह सिर्फ और सिर्फ एक धोखा है।“

असली खेल तब शुरू होती है जब पीड़ित से कहा जाता है - "मामले का समायोजन करना है तो अभी इतने पैसे ट्रांसफर करो, वरना आपको गिरफ्तार कर लिया जाएगा।" डर और अर्जेंसी का तालमेल इतना जबरदस्त होता है कि पीड़ित बिना सोचे लाखों रुपए ट्रांसफर कर देता है।

आरबीआई और गृह मंत्रालय दोनों ने स्पष्ट किया है- कोई भी सरकारी एजेंसी कभी वीडियो कॉल पर पैसे नहीं मांगती। अगर कोई ऐसा करे तो तुरंत कॉल डिसकनेक्ट करें और नेशनल साइबर क्राइम हेल्पलाइन 1930 पर रिपोर्ट करें।

पीएनबी की पहल

पंजाब नैशनल बैंक ने डिजिटल फ्रौड के खिलाफ कई ठोस कदम उठाए हैं जो बैंकिंग क्षेत्र में एक नई मिसाल बन रहे हैं।

पीएनबी भारत का पहला ऐसा बैंक बना है जिसने Clari5 NCRP एकीकरण समाधान को अपनाया। यह प्रौद्योगिकी भारतीय साइबर अपराध समन्वय केंद्र (I4C) के राष्ट्रीय साइबर अपराध रिपोर्टिंग पोर्टल से सीधे जुड़ी है। इससे इन्टरनेट बैंकिंग, मोबाइल बैंकिंग, एटीएम, यूपीआई और एनईएफ़टी/आरटीजीएस जैसे सभी माध्यमों पर वास्तविक समय में धोखाधड़ी का पता लगाना और स्वचालित शिकायत दर्ज करना संभव हो गई है।

इसके अलावा पीएनबी ने अपने 11,000 से अधिक एटीएम, मोबाइल एप और व्हाट्सएप बैंकिंग पर साइबर जागरूकता संदेश प्रदर्शित किए। 8,000 से ज़्यादा ग्रामसभा में जागरूकता अभियान चलाई गई- ताकि ग्रामीण ग्राहक भी डिजिटल फ्रौड से सुरक्षित रहें।

फरवरी 2026 में पीएनबी ने पीएसबी हैकथॉन 2026 भी लाँच किया जो सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक की साइबर सेक्योरिटी को और मज़बूत बनाने के लिए एक राष्ट्रीय नवप्रवर्तन पहल है।

इन बातों पर ध्यान दें

- वीडियो कॉल पर कोई अधिकारी नहीं आता
- सरकार कभी यूपीआई से भुगतान नहीं मांगती
- अर्जेंसी महसूस हो तो रुकें - यही जाल है
- परिवार या बैंक को तुरंत बताएं
- कॉल स्क्रीनशॉट लें, साक्ष्य रखें
- 1930 पर कॉल करें, देर न करें

डिजिटल का भौतिक सुरक्षा पर प्रभाव

मेजर नरेन्द्र सिंह चौहान
मुख्य प्रबंधक (सुरक्षा)
अंचल कार्यालय दुर्गापुर

किसी का प्रभाव जाँचने के लिये उस का इतिहास को जानना जरूरी है। उदाहरण के लिये पहिये के आविस्कार का प्रभाव हम विभिन्न अहसास से जोड़ सकते हैं जैसे कि, मानव के बल का अनुचित प्रभाव, रास्ते के विकास इत्यादि। इसी तरह डिजिटल का इतिहास जानना भी जरूरी है साथ ही साथ भौतिक सुरक्षा का महत्व उतना ही जरूरी है।

पहले भौतिक सुरक्षा का वर्णन करते है। मनुष्य या अन्य जीव जन्म लेते ही अपनी जान की सुरक्षा के लिये कार्यरत हो जाता है। इसे बरकरार रखने के लिये वह कई साधन अपनाता है। इसी साधन का समावेश को यह लेख भौतिक सुरक्षा का दर्जा देगा। अब डिजिटल के बारे में कुछ विस्तार करते है। सुरक्षा हेतु साधन का उपयोग, साधन पर नेतृत्व, ही हमें डिजिटल की परिभाषा देता है। उदाहरण हेतु पहले मनुष्य स्वयं ही शस्त्र लिये 24 घंटे चौकनन्ना रहता था। समय के साथ उसने अपने शस्त्र को नियंत्रण करने हेतु मशीन का आविस्कार किया जो बड़े से बड़े हत्यार को चला सकता था और साथ ही उसे कम से कम हस्तक्षेप द्वारा नियंत्रण में लिया जा सकता था। यही नियंत्रण प्रणाली को हम डिजिटल का दर्जा देंगे

मानव ने अपनी सुरक्षा के लिये आदम काल में जोगी बंजारा होने की नीति अपनायी। भ्रमण में रहने से अन्य शत्रु उस पर प्रहार की नीति बनाने में समय लगते थे। साथ ही साथ उसे भी अपनी सुरक्षा अपनाने और दुश्मन का अहसास लग जाता था। आने समय पर पहिये का आविष्कार हुआ जिसके द्वारा यह भ्रमण सरल हुआ साथ ही स्थिरता भी आने लगी। मनुष्य barbarie, निसवुरता से सामाजिक होने की तरफ अग्रसर हुआ। लगते हुए उसने अपनी सुरक्षा के लिये कई हत्यार भी आविस्कार किये। सामाजिक होने से दो गुट का जन्म हुआ- किसान एवं बंजारे। अब इनके बीच व्यवसाय द्वारा संबंध बने, साथ ही साथ उत्पन्न हुआ साहूकार/बैंकर का जन्म।

इस तरह बंजारे (व्यापारी) और किसानों का समूह होने से आदान प्रदान का सिलसिला शुरू हुआ। हर समूह अपने उत्पाद की सुरक्षा भी करने लगा। इसी बीच साहूकार भी अपनी कमाई के लिये सुरक्षित तरीके ढूंढने लगा। उसने तहखाने और संदूखो का उपयोग करना शुरू कर दिया। यह समय के साथ साथ और मजबूत और अभेदनीय होते गये। साधारण लोग तालों का उपयोग किया करने लगे। तले भी आविष्कार के साथ अभेदनीय होने लगे। इस तरह भौतिक सुरक्षा की शुरुवात हुई।

जैसे जैसे समय बिता आविष्कार सुरक्षा उपकरणों का नवीनिकरण करता चला गया, पर जैसा कि प्राकृति का नियम है, हर चीज की एक सीमा होती है, इसी तरह भरी

भरकम तिजोरी की समय सीमा आ चुकी थी और इस और अधिक भरी नहीं किया जा सकता था। इसके कई कारण है जैसे स्थान से दूसरे स्थान ले जाने में तकलीफ, मकान की बनावट मजबूत करनी इत्यादि। इस कारण से आधुनिक टेक्नोलोजी अब भौतिक सुरक्षा यानि कि मकान की बनावट, तिजौरी की सुरक्षा और तालों के इस्तमल में अपनी योगदान देने लगी।

टेक्नोलोजी में डिजिटल का प्रभाव आने से नवीकरण की रफ्तार बहुत तेजी से बढ्ने लगी। अब तहखानों की जगह डिजिटल से लैस कमरों में अपनी सम्पती का सरक्षण होने लगा। इस कारण से अधिक से अधिक सम्पती न्यूनतम लागत में सुरक्षित की जाने लगी। उदाहरण हेतु:

तिजोरी : अब भारी भरकम संदूकों की जगह, हल्के मजबूत चादर वाले संदूकों ने ले ली। साथ ही में डिजिटल द्वारा उसे एक परत सुरक्षा की और चढ़ा दी गई। अब तिजोरी में तले मनुष्य की आकृति, रंग, आकार, आवाज इत्यादि द्वारा संचालित किया जाने लगा। अधिक से अधिक पहचान भरी मशीन द्वारा चोट करने पर तिजोरी पर संदेश उपकरण इस गतिविधि को सुरक्षा अधिकारी तक पहुँचा देते है और डिजिटल माध्यम से कमरों के और सुरक्षा प्रणाली को सक्रिय कर देते है जिस कारण निकासी असंभव सी हो जाती है। डिजिटल उपकरण लगने से छोटी सी छोटी हरकत जो मनुष्य की देख चूक सकती है, इन उपकरणों से नहीं बच सकती, अब डिजिटल में सुधार आने से मशीनों को हर गतिविधि की श्रेणी दी जा सकती है जिससे उसी श्रेणी की कार्यवाही की जाये।

तहखाने! इसमें भी काफी उन्नति हुई है, उदाहरण के लिये आज कल के अति घातक हत्यार तहखाने में इस तरह रखे जाते है की उसे किसी भी तरह की हानि नहीं पहुँचे। इस के लिये डिजिटल द्वारा हवाई सरक्षण एवं अतिकरण के समय इसकी डिजिटल प्रणाली कार्यशील होकर आक्रमण को ध्वस्त करती है। आक्रमण सफल होने पर भी उस हत्यार को चलाने के लिये डिजिटल सुरक्षा पर हवी होना पड़ता है।

सर्वेक्षण! डिजिटल युग के कारण अब अन्तरिक्ष से धरती पर सर्वेक्षण रखा जाता है। यह इतना शक्तिशाली है की लाखों झील दूर होने पर भी सही आंकलन लगा लेता है। भीड़ पर भी सटीक दृष्टि रखता है, बताये हुए वर्णन को सही से पहचान कर सूचित कर देता है। इसी तरह बैंक में संदेहीन व्यक्ति को पहचान के लिये विडियो रिकॉर्ड लगाये जाते है जिस कारण हादसा होने से पहले हमें सूचना प्रदान कर दी जाती है।

भौतिक सुरक्षा का उद्देश्य होता है कि प्रलय/हादसे को लंबी समय तक धाम सके। यह समय घटना के पहले और पूर्ण होने तक गिना जाता है। पूर्व में संकेत मिलना यह डिजिटल प्रणाली द्वारा बेहतरीन तरीके से किया जा सकता है। घटना होने तक मानव हस्तक्षेप और डिजिटल का तालमेल ही आक्रमण को टाल सकता है। आखिर में घटना हो जाने पर डिजिटल ही बचता है जो पूर्व प्रोग्राम द्वारा घटना के असर को नियंत्रण में रख सकता है। डिजिटल कि तीव्र गति होने से यह घटना के सोचने तक अपना असर दिखाने कि क्षमता रखती है। इसलिये भविष्य में डिजिटल तल ही एक ऐसा हत्यार है जो सब पर हावी रहेगा।

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी का दौरा

अंचल कार्यालय दुर्गापुर द्वारा खेल उत्सव का आयोजन

अंचल कार्यालय दुर्गापुर द्वारा ताल तरंग का आयोजन

विविध गतिविधियां

एमएसएमई आउटरिच कार्यक्रम

रिटेल आउटरिच कार्यक्रम

अंचल कार्यालय प्रागण में नये एटीएम परिसर का उद्घाटन करते हुए एडीडीए अध्यक्ष श्री कवि दत्त

अंचल प्रबंधक श्री संजीव कुमार द्वारा एमसीसी बर्द्धमान के नए परिसर तथा बर्द्धमान मेन शाखा में फोरेक्स लाउंज का उद्घाटन।

अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन लखनऊ में कार्यपालक महोदय श्री अमित श्रीवास्तव द्वारा सर्वश्रेष्ठ राजभाषा प्रदर्शनी हेतु दुर्गापुर अंचल को तृतीय पुरस्कार भेंट करते हुए।

सेल दुर्गापुर नराकास द्वारा अंचल कार्यालय दुर्गापुर को द्वितीय पुरस्कार प्रदत्त।

अंचल कार्यालय द्वारा मंडल प्रमुख समीक्षा बैठक का आयोजन

नराकास बर्द्धमान (संयोजक - पंजाब नैशनल बैंक, मंडल कार्यालय बर्द्धमान) की छमाही समीक्षा बैठक का आयोजन।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह - 2025 के उपलक्ष्य में पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय बर्द्धमान में छात्रों में सतर्कता दिवस के महत्व से संबंधित क्विज प्रतियोगिता का आयोजन।

सतर्कता जागरूकता दिवस - 2025 के उपलक्ष्य में मंडल कार्यालय बर्दवान द्वारा रक्तदान शिविर का आयोजन

जेके कॉलेज, पुरुलिया में विद्यार्थियों के लिए सतर्कता क्विज का आयोजन

मण्डल कार्यालय पुरुलिया में सेवा संकल्प प्रस्ताव बैठक का आयोजन

श्री रामकुमार विश्वकर्मा मुख्य प्रबंधक को सेवानिवृत्ति पर विदाई देते हुए अंचल प्रमुख दुर्गापुर एवं अन्य उच्चाधिकारी गण।

श्रीमती सोमा घोष (लिपिक) शाखा कार्यालय बर्नपुर को सेवानिवृत्ति प्रमाण पत्र भेंट करते हुए श्री आशीष चक्रवर्ती (पूर्व एजीएस दुर्गापुर मंडल)

पत्रिका विमोचन

सुर्खियों में दुर्गापुर अंचल

पीएनबी ने एग्रो आउटरीच प्रोग्राम से किसानों को बतायीं बैंकिंग सेवाएं

...कृति-पत्र देते पीएनबी के अधिकारी.

...को स्वीकृति-पत्र बांटे गये. किसानों ... योजनाओं, सरकारी ... बैंकिंग ... और ग्रामीण ... उत्साह देखने ... अंचल ... संबो...

नराकास की छमाही समीक्षा बैठक

दुर्गापुर. भारतीय इस्पात प्राधिकरण लिमिटेड (सेल) के तत्वावधान में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास) की छमाही समीक्षा बैठक यहां दुर्गापुर स्टील क्लब में हुई. इसकी अध्यक्षता नराकास अध्यक्ष सुरजीत मिश्रा ने की. बैठक में सदस्य कार्यालयों के छमाही कार्यों की विस्तृत समीक्षा की गयी तथा हिंदी के प्रचार-प्रसार व राजभाषा कार्यान्वयन में उत्कृष्ट योगदान के लिए ... कार्यालयों को सम्मानि... जाब...

पुरस्कार ग्रहण करते पीएनबी अंचल प्रमुख व राजभाषा अधिकारी.

बैंक (पीएनबी) ...

प्रबंधक (राजभाषा) आनंद बिहारी साव ने पुरस्कार ग्रहण किया. मौके पर नराकास अध्यक्ष सुरजीत मिश्रा ने पीएनबी अंचल कार्यालय को सराहते हुए कहा कि हिंदी कार्यों को और अधिक मजबूत बनाने की दिशा में यह उपलब्धि महत्वपूर्ण है. वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) आनंद बिहारी साव ने ... पुर को ... सतत ... ष्पादन ... गदान

पुराना संकट अब इतिहास, पीएनबी की बैलेंस शीट सबसे मजबूत

- पंजाब नेशनल बैंक के प्रबंध निदेशक ने किया हाईटेक बनाने का दावा
- दुर्गापुर में कारोपोरेट ग्राहकों के साथ कर्मियों संग भी बैठक

जागरण संवाददाता, दुर्गापुर : देश के अग्रणी सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में शुमार पंजाब नेशनल बैंक ने बैंकिंग सेवाओं को हाईटेक और ग्राहकों के लिए सुलभ बनाने की दिशा में बड़ी पहल की है। बुधवार को दुर्गापुर के दौरा पर आए बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी अशोक चंद्रा ने घोषणा की कि एमएसएमई क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए बैंक अब पूरी तरह डिजिटल माध्यम से 25 लाख रुपये तक का लोन उपलब्ध करा रहा है।

इस दौरान उन्होंने बैंक की मजबूत होती वित्तीय स्थिति, पुराने संकटों से उबरने और दुर्गापुर जोन के विकास रोडमैप पर विस्तार से ...

पत्रकारों को संबोधित करते पीएनबी के प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यकारी अधिकारी • जागरण

भारी-भरकम दस्तावेजों के बोझ से नहीं जूझना होगा। ग्राहक ... पेपरलेस और पारदर्शी है। ...

बैलेंस शीट में से एक है। हमारा नेट एनपीए घटकर मात्र 0.35 प्रतिशत रह गया है और प्रोविजन कवरेज रेशयो 97 प्रतिशत है। बैंक का मुनाफा दोगुना होकर लगभग 16,000 करोड़ रुपये के स्तर पर पहुंच गया है। दुर्गापुर जोन के सात सर्किल और 466 शाखाएं आती हैं, जिनका कुल कारोबार लगभग 64,000 करोड़ रुपये है। चूंकि इस क्षेत्र का 75 प्रतिशत नेटवर्क ग्रामीण और अर्ध-शहरी इलाकों में है, इसलिए बैंक का मुख्य फोकस कृषि और एमएसएमई सेक्टर पर है।

अकेले ...

पंजाब नेशनल बैंक के राजभाषा मुख्य समारोह में छायी रही हिंदी

...का संचालन करते राजभाषा अधिकारी व मंचस्थ अतिथि.

... अंचल प्रमुख ...

हिंदी के प्रति समर्पण तथा सांस्कृतिक ... देखने को मिला है. इस मौके ... अधिकारियों में ... अचार्य, एमसीसी आँचलिया एवं नवनित कुमार के प्रबंधकगण, शाखा अंचल व मंडल अन्य अधिकारी इस दौरान सभी ...जभाषा हिंदी के प्रचार- ...सके कार्यालयी उपयोग ...र बल दिया. धन्यवाद ... कार्यक्रम का समापन ... कार्यक्रम का संचालन ... राजभाषा आनंद

पीएनबी अंचल कार्यालय का खेल उत्सव शुरू, लोग रहे उत्साहित

प्रतिनिधि, दुर्गापुर

पंजाब नेशनल बैंक (पीएनबी), अंचल कार्यालय दुर्गापुर की ओर से कर्मचारियों में खेल-भावना, आपसी सौहार्द एवं स्वस्थ जीवन-शैली के प्रोत्साहन के उद्देश्य से दो दिवसीय खेल उत्सव का आयोजन किया गया. इस खेल उत्सव का शुभारंभ शनिवार को किया गया. मौके पर बैंक के अंचल प्रमुख संजीव कुमार मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे. उनके मार्गदर्शन व प्रेरक भाषण से खिलाड़ियों का उत्साह दोगुना हो गया. सात मंडलों के लोगों ने खेल उत्सव में हिस्सा लिया. उत्सव के अंतर्गत क्रिकेट एवं फुटबॉल जैसे लोकप्रिय खेलों के साथ-साथ कैरम, शतरंज, टेबल टेनिस, बैडमिंटन, शॉटपुट तथा विभिन्न दौड़ प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जायेगा. जिसमें बैंक के बर्दवान मंडल, दुर्गापुर मंडल, मालदा मंडल, पुरुलिया मंडल, नदिया ... और ...

प्रतिभागियों के साथ बैंक के अंचल प्रमुख संजीव कुमार व अन्य.

जलपाईगुड़ी मंडल के अधिकारी व कर्मचारी हिस्सा ले रहे हैं.

क्रिकेट मैच से हुई शुरुआत

उत्सव की पहले दिन की शुरुआत क्रिकेट मैच से की गई. जिसमें बैंक अधिकारियों व कर्मचारियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया और खेल भावना का उत्कृष्ट प्रदर्शन ... दौरान खिलाड़ियों में ... भावना एवं उत्साह ...

आयोजन समि... और पुरस्कार ...

आयोजन के ... आयोजन समिति ...

पंजाब नेशनल बैंक का खेल उत्सव कार्यक्रम

लोगों में रहा उत्साह, विजयी प्रतिभागी हुए पुरस्कृत

दुर्गापुर. पंजाब नेशनल बैंक (पीएनबी) मंडल कार्यालय दुर्गापुर की ओर से खेल उत्सव कार्यक्रम का भव्य आयोजन किया गया. शहर के विधाननगर के सेंटोस क्लब मैदान में आयोजित इस कार्यक्रम में अंचल प्रमुख संजीव कुमार एवं मंडल प्रमुख विजय कुमार की गरिमामय उपस्थिति ने आयोजन को विशेष महत्व दिया. कार्यक्रम का उद्देश्य कर्मचारियों में खेल भावना को प्रोत्साहित करना, शारीरिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाना तथा आपसी सौहार्द को ...

खेल उत्सव कार्यक्रम में बैंक के अधिकारी व कर्मचारी.

का आयोजन किया गया, जिनमें क्रिकेट, बैडमिंटन, शतरंज, कैरम, टेबल टेनिस, शॉटपुट तथा 100 मीटर दौड़ प्रमुख रूप से शामिल रहीं. ... प्रतियोगिताओं में बैंक के सभी वर्गों ... अधिकारियों एवं कर्मचारियों ... उत्साहपूर्वक सहभागिता की और खे... भावना का उत्कृष्ट परिचय दिया.

खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन

प्रतियोगिताओं के दौरान खिलाड़ियों ...

कार्यक्रम को और अधिक जीवंत बना... दिया। अपने संबोधन में अंचल प्रमुख ...

दुर्गापुर में पीएनबी का कल्चरल प्रोग्राम तालतरंग हुआ आयोजित

...र्यक्रम में उपस्थित बैंक अधिकारी.

...कर्मचारियों की रचनात्मक प्रतिभा और टीम भावना को मिला मंच

...र्गापुर. पंजाब नेशनल बैंक के ...डल कार्यालय दुर्गापुर की ओर से ...टल मोरबी में तालतरंग सांस्कृतिक ...र्यक्रम का भव्य आयोजन किया ...या. कार्यक्रम में अंचल प्रमुख ...जीव कुमार और मंडल प्रमुख ...जय कुमार की उपस्थिति रही. ...आयोजन का उद्देश्य कर्मचारियों की ...चनात्मक प्रतिभा को मंच प्रदान ...रना और आपसी सौहार्द व टीम ...ावना को मजबूत करना रहा.

...च पर सांस्कृतिक प्रस्तुतियां

...लतरंग के मंच पर बैंक के विभिन्न ...वर्गों से जुड़े स्टाफ सदस्यों ने अपनी ...जनात्मक प्रतिभा का प्रदर्शन किया. गीत, नृत्य, समूह प्रस्तुतियां और अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रमों ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया. सभी वर्गों के कर्मचारियों की सक्रिय भागीदारी से आयोजन में उत्साह और उल्लास का माहौल बना रहा.

अधिकारियों के विचार

अंचल प्रमुख संजीव कुमार ने अपने संबोधन में कहा कि ऐसे सांस्कृतिक आयोजन कर्मचारियों के मनोबल को बढ़ाते हैं और संगठन के भीतर सहयोग, सकारात्मक सोच तथा टीम भावना को सुदृढ़ करते हैं. मंडल प्रमुख विजय कुमार ने प्रतिभागियों की सराहना करते हुए इसे कर्मचारियों की छिपी प्रतिभाओं को सामने लाने वाला प्रेरणादायी प्रयास बताया.

पीएनबी को मिला सर्वश्रेष्ठ कार्य निष्पादन का पुरस्कार

...क अंचल कार्यालय, दुर्गापुर को लाला लाजपत राय ... 'ग' क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ कार्य निष्पादन हेतु प्रथम पुरस्कार ...दुर्गापुर अंचल की गृह पत्रिका 'दुर्ग्वाहिनी' को तृतीय ...गया. अंचल कार्यालय के वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) ...या कि पीएनबी के प्रधान कार्यालय द्वारा आयोजित ...ह पुरस्कार प्रदान किया गया. इस अवसर पर बैंक के ...ार्यपालक अधिकारी अशोक चंद्रा ने अंचल प्रमुख ... और आनंद बिहारी साव को पुरस्कार प्रदान किया. ...चल कार्यालय के पदाधिकारियों और कर्मचारियों में ...ा.

पीएनबी का एमएसएमई आउटरीच प्रोग्राम

प्रतिनिधि, दुर्गापुर

सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम (एमएसएमई) सेक्टर को सशक्त बनाने और उन्हें आसान व त्वरित वित्तीय सहायता उपलब्ध कराने के उद्देश्य से पंजाब नेशनल बैंक (पीएनबी) द्वारा शुक्रवार को शहर के सिटी सेंटर स्थित अंचल कार्यालय में पीएनबी एमएसएमई आउटरीच कार्यक्रम का आयोजन किया गया. कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में पीएनबी प्रधान कार्यालय के मुख्य महाप्रबंधक सुनील अग्रवाल उपस्थित रहे. उनके साथ उप मंडल प्रमुख, दुर्गापुर गोपाल कृष्ण, तथा आसपास के विभिन्न शाखाओं के शाखा प्रबंधक भी मौजूद थे. मौके पर मुख्य महाप्रबंधक सुनील अग्रवाल ने कहा कि इस कार्यक्रम का उद्देश्य

स्टार्टअप्स व उद्यमियों को प्रोत्साहन

नये स्टार्टअप उद्यमियों को ऋण स्वीकृति-पत्र सौंपते बैंक अधिकारी.

देशभर की एमएसएमई इकाइयों को "सुलभ, त्वरित और डिजिटल ऋण सेवाएं" प्रदान करना है, ताकि व्यवसायों के विकास में तेजी लायी जा सके.

मौके पर उपस्थित उप मंडल प्रमुख गोपाल कृष्ण ने बताया कि एमएसएमई देश की आर्थिक वृद्धि का मुख्य आधार हैं और इस प्रकार के कार्यक्रम एमएसएमई तथा औपचारिक बैंकिंग व्यवस्था के बीच की दूरी को कम करते हैं.

ऋण उत्पादों की दी गयी विस्तृत जानकारी: कार्यक्रम में पीएनबी जीएसटी एक्सप्रेस, पीएनबी ट्रेड ग्रोथ, डिजी एमएसएमई लोन, और पीएनबी एक्सपोर्ट एक्सप्रेस जैसे प्रमुख ऋण उत्पादों की विस्तृत जानकारी दी गई. बैंक अधिकारियों ने बताया कि इन योजनाओं में आकर्षक ब्याज दर, न्यूनतम दस्तावेजीकरण और पूरी तरह डिजिटल प्रक्रिया जैसी विशेषताएं शामिल हैं, जो उद्यमियों के लिए बेहद लाभकारी हैं.

ग्राहकों की ऑन-द-स्पॉट पात्रता जांच की गई : इस अवसर पर कई योग्य ग्राहकों की ऑन-द-स्पॉट पात्रता जांच की गई और उन्हें परामर्श व सैद्धांतिक स्वीकृतियां भी दी गयीं. नए स्टार्टअप उद्यमियों को ऋण स्वीकृति पत्र सौंपे गए, जबकि अन्य लाभार्थियों को भी ऋण पत्र वितरित किए गए. कार्यक्रम से स्थानीय व्यवसायों और नए उद्यमियों को बड़ा प्रोत्साहन मिला और बैंक की ओर से भरोसा दिलाया गया कि भविष्य में भी ऐसे कार्यक्रमों के माध्यम से एमएसएमई को मजबूत समर्थन मिलता रहेगा.

pnb

ONE
#JustOneApp

किसान समृद्धि योजना

- कृषि एवं संबद्ध गतिविधियों/ग्रामीण आवास/उपभोग आवश्यकताओं के लिए उत्पादन एवं निवेश ऋण हेतु वित्तपोषण
- 2 वर्ष का संतोषजनक ट्रैक रिकॉर्ड
- अधिकतम सीमा ₹ 10 करोड़
- कार्यशील पूंजी के मामले में शून्य मार्जिन
- सावधि ऋण (TL) के मामले में 9 वर्ष तक की चुकौती अवधि
- आकर्षक ब्याज दर

हमें फॉलो करें : www.pnbindia.in | टोल फ्री नम्बर 1800-1800 & 1800-2021 | 1800 180 8888 पर मिस्ड कॉल दें

पंजाब नैशनल बैंक ...भरोसे का प्रतीक ! punjab national bank ...the name you can BANK upon !

मुद्रण एवं पत्रिका डिजाइन : अंजनी प्रकाशन, कोलकाता, पश्चिम बंगाल, मो. 8820127806, ई-मेल : support@anjaniprakashan.com